ISBN Number: 978-93-342-2188-6 (Book)
ISSN 2229-547X (online)



ৱিদেহ ৪১২ ম অংক ১৬ ফৰৱঁৰী ২০২৬ (ৱর্ষ ১৫ মাস ২০৩ অংক ৪১২)

[ৱিদেহ (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



ৱিদেহ মৈথিলী সাহিত্য আন্দোলন: মানুষীমিহ সংস্কৃতাম্



ৱিদেহ- প্রথম মৈথিলী পাক্ষিক ঙ্ৱা-পত্রিকা

সম্পাদক: গজেন্দ্র ঠাকুৰ।









(c)২000- ২০২৬. ৱিদেহ: প্ৰথম মৈথিলী পাক্ষিক ই-পত্ৰিকা (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). সম্পাদক: গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ। Editor: Gajendra Thakur.

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR
Videha e-Journal: Issue No. 412 at www.videha.co.in

সমানান্তৰ পৰম্পৰাক ৰিদ্যাপতি- *চিত্ৰ ৰিদেহ সম্মানসঁ সম্মানিত শ্ৰী পনকলাল মণ্ডল দ্বাৰা*

মৈথিলী ভাষা জগজ্জননী সীতায়াঃ ভাষা আসীৎ। হনুমন্তঃ উক্তৱান- মানুষীমিহ সংস্কৃতাম্।

অনুক্রম

ঐ অংকমে অছি:-

২.৯.আশীষ অনচিন্হার- সাহিত্য অকাদমীমে নৈতিকতা-সংদর্ভ মৈথিলী প্রভাগ-বিশেষ সংদর্ভ নচিকেতাজীক কার্যকাল

২.৬.আচার্য রামানংদ মংডল-মহাকবি চংদা ঝা বনাম ভাষাবিদ গ্রিয়র্সন : মিথিলা ভাষা/ অশোক বাটিকা মে সীতা সংগ বার্তা ভাষা বনাম মানুষী ভাষা (মৈথিলী)

২.৭.প্রণব কুমার ঝা-জতয মোন ততে হম(লঘুকথা)

২.৮.কুন্দন কর্ণ- ডেবা

২.৯.নির্মলা কর্ণ- গোজঠা মে ঘী সুখাযবঁ

২.১০.ডা বিদ্যা নাথ ঝা- স্বর্গ কেহেন ? নর্ক কেহেন ?

পদ্য

২.১.কল্পনা ঝা- ৰঁকনেন নয ছৈঁ

২.২.ৰাজ কিশোৰ মিশ্ৰ-সভ্যতাক ভ্ৰম

২.৩.প্ৰমোদ ঝা 'গোপ্কন'-সহৰ্ষ মড়ান

২.৪.জগদানন্দ ঝা 'মন্ব'-৩০ টা হাগক



১.অংক ৪১১ পৰ টিপ্পণী

আশীষ অনচিন্হাৰ

প্ৰণৱ ঝাক সচিত্ৰ যাত্ৰা ৱিৱৰণ নীক লাগল। এহি তৰহক ৱিৱৰণ পাঠক লেল নীক ৰহৈত অা উত্সুকতা ৱঁনেনে ৰহৈত। এহেন-এহেন যাত্ৰা ৱিৱৰণ আৰো এৱাঁক চাহী।

অপন মংতৱ্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

গদ্য

২.১.কল্পনা ঝা-মৈথিলী সাহিত্যমে উপেন্দ্র নাথ ঝা 'ব্যাস' এবং হुनक परिवारक योगदान-४

২.২.প্রমোদ ঝা 'গোকুল'-হিজড়া

২.३.পরমানন্দ লাল কর্ণ-তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্য-২

২.४.লাল দেব কামত-উজর্ম্বিতা

২.৯.আশীষ অনচিন্হার- সাহিত্য অকাদমীমে নৈতিকতা-সঁদর্ভ মৈথিলী প্রভাগ-বিশেষ সঁদর্ভ নচিকেতাজীক কার্যকাল

২.৬.আচার্য রামানংদ মংডল-মহাকবি চংদা ঝা বঁনাম ভাষাবিদ গ্রিয়র্সন : মিথিলা ভাষা/ অশোক বাটিকা মে সীতা সংগ বার্তা ভাষা বঁনাম মানুষী ভাষা (মৈথিলী)

২.৭.প্রণব কুমার ঝা-জতয মোন ততৈ হম(লঘুকথা)

২.৮.কুন্দন কর্ণ- ডেরা

২.৯.নির্মলা কর্ণ- গোগর্ঠা মে ঘী সখাযবঁ

২.১০.ডা বিদ্যা নাথ ঝা- স্বর্গ কেহেন ? নর্ক কেহেন ?

২.১.কল্পনা ঝা-মৈথিলী সাহিত্যমে উপেন্দ্র নাথ ঝা 'ব্যাস' এবং হুনক পরিবারক যোগদান-৪



কল্পনা ঝা

মৈথিলী সাহিত্যমে উপেন্দ্র নাথ ঝা 'ব্যাস' এবং হুনক পরিবারক যোগদান-৪

তন্ত্রনাথ-দক্ষ' করি হোএবাক আরোপ সঁ আরোপিত 'ব্যাস' জী

দরভংগা জাএ, বড়ী রাজমাতাক সমক্ষ হরিপুর 'বখ্শী' টোলক

निवासीक रूप मे अपन परिचय दऽनिहार एकटा वानक; जनिका ओहि गाम मे केओ ठुन्हाग, केओ न्हन्नू, केओ भठाग केर नाम सँ चिन्हैत छलनि, से वानक विद्यार्थीए जीवन मे अपन वहुमुखी प्रतिभाक प्रदर्शन करैत, मैथिल समाज मे प्रसिद्धि पाबए लागल छलाह। कुशाग्र बुद्धिक कारणेँ शिक्षाक क्षेत्र मे सभदिन, सभठाम, माने स्कूल सँ कालेज धरि, अपन विशेष पहचान बनबैत कऽलनि, संगहि साहित्यिक गतिविधि मे सक्रियता सेहो विशेष पहचान दिऔलकनि।

'व्यास' जी १९३४ मे प्रथमा, १९३६ मे मध्यमा आदिक डिग्री प्राप्त कऽलनि। मिथुन राशिक रहने स्वाभाविक रूपेँ ज्योतिष-विद्या मे हुनकर विशेष अभिरुचि छलनि। गणित पर अधिकार रहलनि, तेँ ज्योतिष-विषय मे डिग्री प्राप्त करबा मे विशेष असौकर्य नहि भेलनि। तत्पश्चात पटना साइन्स कालेज मे नाम लिखाओल गेलनि...पछाति अंग्रेजी नियर्किंस कालेज मे। सौभाग्यवश पाठ्यक्रमक पढ़ाइक संग हुनका साहित्यिक अभिरुचि केँ संवर्धित करबाक हेतु यथोचित वातावरण भेटलनि बिहारक राजधानी पटना मे। ओतहि सुभद्र झाजी विसर्ठ करैत रहथि। हुनका सँ सम्पर्क भेलनि। प्रोफेसर हरिमोहन झाक आशीर्वाद प्राप्त कऽलनि। १९३८ मे दरभंगा सँ स्व.रमानाथ झाजी द्वारा सम्पादित त्रैमासिक 'साहित्यपत्र' मे धारावाहिक रूप मे प्रकाशित श्रद्धेय तन्त्रनाथ झाजीक 'कीचकवध'क छन्द विशेष आकृष्ट कऽलकनि 'व्यास' जी केँ, ई गप्प ओ स्वयं स्वीकार करैत छलाह।

तन्त्रनाथ झाजीक कीचक-वध सँ ततेक प्रभावित भेलाह 'व्यास' जी,

जे ओहि प्रभावक प्रभावेँ एकटा महाकाव्य लिखि लेने रहथि। मुदा से कतहु छैवा गेलनि, जे फेर नहिए भेटलनि कहियो। ओना एहि छैवा जेबाक प्रसंग पर हमरा मोन मे तत्क्षण गएह आबि रहल अछि, "जे होगत ठीक से नीकेँ होगत ठीक" कारण जँ ओ महाकाव्य प्रकाशित होगतनि तँ आरो बेसी आरोप लगितनि, जे 'व्यास' जी 'तन्त्रनाथ -दक्ष' करि छथि। जाहि व्यक्तिक व्यक्तित्व सँ हमसभ प्रभावित होगत छी, ओहने गुण अपना भीतर विकसित करबाक प्रयास करब स्वाभाविक अछि। तहिना कोनहुँ कविक रचना सँ प्रभावित होगत हुनकर अनुकरण मे लिखब, सामान्य बात ठीक। तँ से किछु गणमान्य केँ 'व्यास' जी, तन्त्रनाथ बाबूक अनुकरण करैत बुझा पड़लथिन। आ एही कारणेँ आरोपित भेलाह, बहुत लोक कहए लगलथिन, 'व्यास' जी 'तन्त्रनाथ -दक्ष' करि छथि।

जखन कि आगाँ चलि क**ए** हिनकर सन्यासी (खण्ड-काव्य) एवं प्रतीक (कविता-संग्रह) मे संकलित अनेकों काव्य-रचना मे तन्त्रनाथ बाबू अथवा आन कोनो कविक एक रत्ती प्रभाव नहि भेटैत। 'पतन' अपना ढंगक काव्य-रचना थिकनि.. ककरो कोनो प्रभाव नहि ... पूर्णरूपेण मौलिक। 'व्यास' जीक कहब छलनि जे "प्रत्येक करि अपन वस्ताक तलाश स्वयं करैत अछि। एहि मे पूर्व सँ अबैत कतेक पन्थ, कतेक भाव सँ प्रभावित होगत रहैत अछि। वर्नैकभर्स... माइकेल मधुसूदन भारत मे प्रचलित कएलनि, अपन मेघनाद-वध मे। तकर बाद तन्त्रनाथ बाबू कीचक-वध मे। हमर करि-जीवनक आरम्भिक काल छल, हमरो नीक लागल।" कहबाक माने करि-जीवनक आरम्भिक दौर मे

कोनो विशेष करि सँ प्रभावित होएबाक बात कें 'व्यास' जी सामान्य ओ स्वाभाविक क्रिया मानि वहन छथि। एहि मे कोनो हर्ज वला बात नहि, तेहन मन।

दुर्गापूजाक अवसरक पर मिथिला मिहिर मे प्रकाशित तन्त्रनाथ बाबूक एक 'सानेट' (चतुर्दश-पदी) सेहो 'व्यास' जी कें बेस प्रभावित कएने छलनि। ओहि छन्दक अनुकरण कए ओ पहिल सानेट 'सूर्य' १९३८ ई. मेष-संक्रान्ति दिन लिखलनि। एहि चतुर्दश-पदीक किछु पाँती एहि तरहें अछि--

जाहि तेज-पुञ्जक अवंगछ किछु अंश

शक्ति भवन ज्योतिक तरङ्ग, एहि प्रांत

जीवन रूप, तथा जागछ आश्रांत

शेष कतए अज्ञात ! विश्वसव-हंस ।

आदि-शक्ति-भाजन, शुभ दीप्त ललाम

ज्योति पदमे स्वीकृत करिअ प्रणाम।

एहि तरहेँ 'व्यास' जीक लेखनी रफ्तार पकड़ैत गेलनि। लोक 'नोटिस' करए लगलनि। पहिल काव्य-रचना 'विदाग-गान'क उपरान्त किछु छिटपुट कविता सभ लिखैत रहलाह 'व्यास' जी।किछु अंग्रेजी कविताक अनुवाद सेहो कएलनि। विद्यार्थीए जीवन सँ हुनकर लेखनी निर्बाध चलैत रहलनि।

१९३८ मे 'सानेट'क उपरान्त 'व्यास' जी 'ब्लैंक भर्स' सेहो अपनौलनि। कहबाक माने सभ तरहक प्रयोग करैत रहलाह। कोनो एक तरहक 'पैटर्न' मे बान्हल नहि रहलनि 'व्यास' जीक काव्य-रचना। पटना मे, १९३९ मे विद्यापति स्मृति-पर्वक आयोजन धूम-धामक संग सम्पन्न भेल रहैक । काव्य-पाठक हेतु 'व्यास' जी केँ सेहो आमन्त्रित कएल गेल छलनि। ओहि दिन, एक साँस मे एक बैसकी मे १७४ पंक्तिक कविता केँ पूरा पाठ कएलनि 'व्यास' जी। आ मूलतः ओही दिनक 'विद्यापतिक मृत्यु' शीर्षक कविताक-पाठ करबाक फलस्वरूप 'व्यास' जी केँ लोक एकटा मैथिली कविक रूप मे चीन्हए-जानए लगलनि। तकरे बाद सन् १९४१ मे 'व्यास' जी सन्यासी खण्ड-काव्य लिखब प्रारम्भ कएलनि। खेपा-खेपी लिखैत चारि वर्ख मे पूरा भेलनि। मौलिक कथानक सँ युक्त ई खण्ड-काव्य १९४७ मे धारावाहिक रूप मे मिथिला मिहिर मे छपलनि। पछाति पोथी- रूप मेँ सेहो छपलनि, मुदा 'कुमार' उपन्यासक बाद। जखन कि लिखलनि पहिने 'सन्यासी' खण्ड-काव्य मुदा प्रकाशित भेलनि पहिने 'कुमार' उपन्यास। जाहि 'कुमार' उपन्यासक सृजन 'विएकमन' मे कएल गेल छलए 'व्यास' जी द्वारा।

সংপাদকীয সূচনা-এহি সিৰীজক প্ৰৱান ক্ৰম এহি লিংকপৰ জা ক**ই** পঢ়ি সকৈত ছী-

মৈথিলী সাহিত্যমে ডপেন্দ্র নাথ ঝা 'ব্যাস' এৱং হুনক পৰিবাৰক যোগদান-1

মৈথিলী সাহিত্যমে ডপেন্দ্র নাথ ঝা 'ব্যাস' এৱং হুনক পৰিবাৰক যোগদান-2

মৈথিলী সাহিত্যমে ডপেন্দ্র নাথ ঝা 'ব্যাস' এৱং হুনক পৰিবাৰক যোগদান-3

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাওা।**

২.২.প্ৰমোদ ঝা 'গোকুল'-হিজড়া



প্রমোদ ঝা 'গোক্বল'

হিজড়া

গাড়ী ফ্বনকন জাৰহন চ্বনৈ খ্বা নিতীশ খ্বপন ৬পৰকা ৰ্ৰ্থ পৰ হিঠকোনা খাগত খ্বাঁখি ম্বননে স্বূতন চ্বনাহ ।তখনে কোনো ষ্টীসন পৰ ঝষ্টকাক স্বঁ গাড়ী ৰুকনৈ কি ফ্বনক খ্বাঁখি খ্বকস্মাত খ্বুজি গেনৈন ।এমহৰ ওমহৰ খ্বাঁখি ঘুমাকে দেখননি তে ককৰো খ্বাৰ্ৰাজাহী নৈ ৰ্বুঝেনৈন ।মাত্র দূষ্টা কিন্নৰ থপৰী ৰ্ৰজৰ্ৰতৈ ভীতৰ প্ৰৱেশ কেনকৈ সে দেখি ও খ্বাৰো গৰ্ৰদী মাৰি নিঠেধ্বষ্ট জকাঁ খ্বাঁখি মূনি নেনৈন।

ও দ্বনূ কিন্নৰ ৰোঁগী কে দ্বন্নূ কাত স্বঁ খ্বপন ঠিৰপৰিঠিত খ্বংদাজ মে ৰস্বূনী কৰয নাগন ।সীষ্টন স্বাষ্টন একষ্টা য্বূৰকক গান কে ঐঁঠৈত ও ৰ্ৰাজনি-ৰ্ৰঙ্ক স্বন্নৰ নগৈ ঠেঁ ৰে ঠিকনা ! মোন তে হোগযে জে তোহৰ দ্বনূ ষ্টমাষ্টৰ স্বন গান পৰ খ্বপন ঠোৰক চ্বাপ

छोड़ि दियौ !दही जेरी मे हाथ आ ना दस रीसगो रूपैया !ओ अपन हाथ रॅढ़रैत रॉजनि ।युवक मेहो हवरॅवा के ओकव हाथ मे एकटा पचासक नोट थमा देनैन ।ढेव आशीर्वाद दैत ओ दोसव तेसव आ चाविम नग ऐहना अश्लीन अंदाज मे रॅढ़ैत गेनि आ सवॅ ओकव हाथ मे मुस्कियैत दस रीसक नोट थमहरैत गेनै ।

ओ किन्नव नोट सवॅ के रिँनौजक अंदव ठुसैत मोहक अंदाज मे कने आव आगाँ रॅढ़नि तँ ङपवका रॅर्थ पव गरॅदी मावने सूतन नितीश पव ओकव नजैव गेनै ।ओ सहैटैके पहुँचनि ओकवा नग। पहिने हिना डोना के देखनक ते कोनो अमैव नै ।अंततः ओ अपना पव ङतैव गेन ।चाव भाग नजैव खिवौनक आ अपन रॅस्मा हाथ ओकव मार्मिक जगह पव त दैहना हाथे जोव मे गान ऐँठैत रॉजनि-किछ देरॉ कवरिँहिन कि गरॅदीये मावने वहरेँ वे ठिकना ?ओकव अभद्रता पव भवकैत नितीश खूरॅ जोव सँ रॅजनाह-

-भगै छँ ऐठाँ मे कि नै !!!

-नै.. क नेरेँ तोँ हमव ?पैहने हमव मामूनी द दे!

-नै देरौ !कहै छियौ चन जो नै ते ..कमा के नै खैन होग छैन !

-हँ ते ठीक छै चन तोहीँ वाखि ने हमवा !झाडू पोछा मे न के खाना पीना तक सवॅ काम क देरौ ,आ हे घवरॉनी मे मोन ङचाट भ जेतौ ते रिँस्तवो के गवमा देरौ !

-रॅघ..मूह नै नगा हमवा मे ! हे ने हम एत्ते ऐगना टीमन पव ङतैव जाग छी !के मूह नगारेँ तोवा सवॅ मे ?

-कत्त?पैहने हम्मव द दे..एक हाथे गष्टा पकवि आ दोसव हाथे

ওকৰ ডাঁৰ কে অপনা মে সহঁৰৈত ৰাঁজনিও।ওকৰা অপনা সে ফৰাক কৰৈত নিতীশ ৰঁজনাহ-
-হে নে দস ৰুপৈয়া ..ৰেঁসর্মীক হদ হোগ ছৈ !আখিৰ হিজৰে ছিযেঁ কি নে !
কী কহনিহী ..হিজড়া..ৰে স্বন ! জৈহ গম্রৰ তোৰা আৰূ কে ৰঁনৌনে ছৌ সৈহ হমৰো আৰূ কে ৰঁনৌনে ছৈ ! ফর্ক এতৰেঁ জে প্রণ্রৃতিক দেন সৰঁ ৰস্তু সে তোঁ আৰূ সঁপন ছেঁ আ হম আৰূ ধ্বৰা কাযা এক ৰঁ হোগতো ৰিপন! নৰ নে মাদা ! হি..জ..ড়া..সমাজ মে ঙপহাস আ অপমানিত ভয গৰনময জীৰন ব্যতীত কৰৈক নেন ৰাধ্য! তোঁ ঠীকে কহনেঁ ম্বদা স্বনিনে-হমহূঁ কাগত কনম আ সিনেটঁ পিন্সিন ন কে গেন ৰহিযৈ নাম নিখৰৈঁনে গসকূন ।মাহটঁৰ নৈ নিখনকৈ হমৰ নাম আ কহনকৈ"তোঁ হিজড়া ছিযেঁ !ঐ মানে আফদ !!চন ভাগ যহাঁ সে !!!মাগযো ৰাঁপ নৈ ৰাখি সকনৈ অপন ঘৰ মে ।এক দিন নিকৈন দেনকৈ ওহো সৰঁ অপনা ঘৰ সে আ ধকেন দেনকৈ ঐ নির্নজ পথ পৰ জীৰন ব্যতীত কৰৈক নেন ।জঁ সত পূছেঁ তঁ সৰঁসে পৈঘ হিজড়া তোঁ আ তোহৰ সমাজ ছৌ!!ৰুঁঝনীহী...এতৰাঁ কহৈত ওকৰ আঁখি ভৈৰ এনৈ আ কঁঠ অৱৰুধ সেহো ভ গেনৈ তেঁ ঐ সে আগাঁ নৈ ৰাঁজি সকন ।গাড়ী মে ৰৈঁসন সৰঁহক দিস নোৰৈন আঁখিযে এক ৰেঁৰ দেখনক আ ফফকি ফফকি কানয নাগনি ।সৰঁ পসীন্জৰ অপন অপন মূড়ী খসা নেনক জেনা ৰৈহ সৰঁ ঐ সমাজক অপৰাধী হুএ ।তখনে গাড়ীক গতি মন্দ ভয গেনৈক।সৈত কোনো টীসনআৰিঁ গেনৈ ।ঝটঁকাক সঁ গাড়ী ৰুকনৈ আ ও ভাৰী মোন সঁ ঙতৈৰ গেনি
-----------------------'

অপন মंতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.২.পৰমানন্দ নান কৰ্ণ-তীৰ্থক্ষেত্ৰক মাহাত্ম্যে-২

পৰমানন্দ নান কৰ্ণ

তীৰ্থক্ষেত্ৰক মাহাত্ম্যে-২

ß



গতাঁক সँ আগাঁ ......

তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্য

(পদ্ম পুরাণ স্বর্গ খণ্ড)

নারদ জী যুধিষ্ঠির সँ কহৈত ছথিন - রাজন ! তকর বাদ সৌগন্ধিক বনক যাত্রা কর'ক চাহী । এহি বন মে প্রবেশ করৈত লোকনি সব পাপ সँ মুক্ত ভই জাযত ছথি । তকর বাদ সব নদি মে শ্রেষ্ঠ সরস্বতী আবৈত অছি , জেকরা প্লক্ষা দেবী সেহো কহল জাযত অছি । এহি ঠাম বাঁবী সँ পানিক ধাব নিকলল অছি , ওহি ঠাম স্নান করী । তকর বাদ দেবতা আ পিতরক পূজন করনা সँ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । স্বগন্ধা ,শতকুম্ভা আ পঞ্চযজ্ঞক যাত্রা করনা সँ লোকনি স্বর্গ লোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ছথি ।

তদুপ্রান্ত ,তীন্ন লোক মে বিখ্যাত স্বরর্ণ নাম সँ তীর্থ স্থল পর জাযক চাহী । ওহি ঠাম ভগবান শঁকরক পূজা করনা সँ লোকনি কেঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ গণপতি পদ সেহো মিলৈত ছৈন । ওহি ঠাম সँ ধুমবন্তী দিস জায কেব চাহী । ওহি ঠাম তীন রাতি বহলা পর লোকনি কেঁ মনবাঁছিত কামনাক পূর্তি ভই জাযত অছি । , তাহি মে কোনো সঁদেহ নহি । দেবীক দক্ষিণার্ধ দিস রথাবর্ত নাম সँ জগহ অছি , জাহি ঠাম শ্রদ্ধালু আ জিতেঁদ্রিয লোকনি কেঁ মহাদেবক কৃপা সँ পবমগতি মিলৈত অছি । তকর বাদ মহাগিবী কেঁ নমন কই হবিদ্বারক যাত্রা করী আ একাগ্রচিত্ত ভই কোটৌতীর্থ মে স্নান করী । এহন করই বালা লোকনি পুণ্ডবীক যজ্ঞক ফল পাবৈত ছথি । ওহি ঠাম এক রাতি রুকলা পর সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি । সপ্তগঙ্গ,ত্রিগঙ্গ আ শক্রাবর্ত নাম সँ তীর্থ স্থল পর দেবতা আ পিতবক বিধি-বিধান সँ তর্পণ করই বালা লোকনি পুণ্যলোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ছথি । কনখল মে স্নান কই তীন রাতি রহলা সँ লোকনি কেঁ অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি আ ও স্বর্গ লোক জাযত ছথি । ওহি ঠাম সँ ললিতা

নাম সঁ উত্তম তীর্থ স্থল অছি , জাহি ঠাম স্নান কৰনা সঁ লোকনি কেঁ কখনহু দুর্গতি নহি হোযত ছৈন ।

রাজন্ ! তত্পশ্চাত কালিন্দি তীর্থ স্থলক যাত্রা কর'ক চাহী ।ওহি ঠাম নহেলা সঁ মনুষ্য কেব কখনহু দুর্গতি নহি হোযত অছি । পুষ্কর, কুরুক্ষেত্র, ব্রহ্মাবর্ত , পৃথূদক,অবিমুক্ত ক্ষেত্র আ সুবর্ণ নাম সঁ প্রসিদ্ধ তীর্থ স্থল মে জতেক ফল মিলৈত অছি ,ওহি সঁ বেসী ফল যমুনাজী মে নহেলা সঁ মিলৈত অছি । নিষ্কাম আ সকাম ভাব সঁ জে কেও যমুনাজীক জল মে গোতা লগাবৈত ছথি,ও এহি লোক আ পরলোক মে দুঃখ নহি ভোগৈত ছথি । জেনা কামধেনু আ চিন্তামণি মনোগত কামনা পূরা কহ দৈত অছি , তহিনা যমুনা জী মে নহেলা সঁ সব মনোরথ পূরা ভহ জাযত অছি । সত্যযুগ মে তপ, ত্রেতা যুগ মে জ্ঞান , দ্বাপর মে যজ্ঞ আ কলযুগ মে দান সর্বশ্রেষ্ঠ মানল গেল অছি ; মুদা কালিন্দ-কন্যা যমুনা জী সদিখন শুভকারিণী ছথিন । যমুনা জী মে স্নান সব বর্ণ আ সব আশ্রমক লেল ধর্ম অছি । সব লোকনি কেঁ চাহী জে ভগবান বাসুদেবক প্রসন্নতা , সব পাপক নিবৃত্তি আ স্বর্গলোকক প্রাপ্তিক লেল যমুনা মে স্নান কবথি । জোঁ যমুনা স্নানক অবসর নহি মিলল তহ নীক,স্বস্থ, বলিষ্ঠ ব নাশবান শরীবক বক্ষা কবনা সঁ কোনো লাভ নহি অছি ।

বিষ্ণুভক্তি সঁ বহিত ব্রাহ্মণ , বিদ্বান লোকনি সঁ বহিত শ্রাদ্ধ,ব্রাহ্মণ ভক্তি সঁ শূন্য ক্ষত্রিয , দুরাচার সঁ দূষিত কুল , দম্ভযুক্ত ধর্ম , ক্রোধপূর্বক কএল গেল তপ , দৃঢ়তা বহিত জ্ঞান, প্রমাদপূর্বক কএল গেল শাস্ত্রাধ্যযন,পরপুরুষ আসক্ত জনানী , মদযুক্ত ব্রহ্মচারী ,বুঝল আগি মে কএল গেল হবন ,কপট পূর্ণ ভক্তি ,জীবিকাক সাধন বনল কন্যা ,অপনা লেল বনাওল গেল ভোজন ,শূদ্র সন্যাসীক সাধন গেল যোগ, কৃপণক ধন ,অভ্যাস বহিত বিদ্যা ,বিরোধী জ্ঞান ,জীবিকাক সাধন বনল তীর্থ আ ব্রত অসত্য আ চুগলী সঁ ভবল বাণী , চঃ কান মে পহুঁচল গুপ্ত জ্ঞান ,চঁচল চিত্ত সঁ কএল গেল জপ অশ্রোত্রিযক দেল গেল দান , নাস্তিক মানুষ আ অশ্রদ্ধাপূর্বক কএল গেল দান সব পারলৌকিক কর্ম - ঈ সব জেনা নষ্টপ্রায মানল গেল অছি তহিনা যমুনা স্নানক বিনা মানুষক জন্ম সেহো নষ্ট অছি । মন,বাণী আ কর্ম কএল গেল কাম ,সূক্ষ্ম, লঘু আ স্থূল - সব প্রকারক পাপ যমুনাজী মে স্নান কবনা সঁ নষ্ট ভহ জাযত অছি । জেনা ভগবান বিষ্ণুক ভক্তি মে সব মানুষক অধিকার অছি , তহিনা যমুনা জী সবহক পাপ নষ্ট কহ দৈত ছথিন । যমুনা জী

এহি প্রকাব থোড়রহি দিন মে দ্বন্ব গোষ্ঠৈক বাখন ধন খয়ে ভ২ গেন ।ঘব মে কিছু নহি ৱাঁচন, জাহি সঁ ও অপন জীরন নির্রাহ কহ সকথি । ধনক অভার মে সর সুজন,ৱাঁন্ধর,সেরক আ আশ্রিত ষ্মনকব সঁগ হাগি দেনকনি। ওহি ঠাম ষ্মনকব স্থিতি দযনীয ভ২ গেন ছন । অপন জীরন নির্রহনক নেন চোবী কেব সহাবা নেনথি , মুদা বাজা আ নোকক ডব সঁ ওহি ঠাম সঁ ভাগি কে রন মে চনি গেনাহ । ওহি ঠাম পাপপূর্ণ আহাব সঁ অপন জীরিকা চনরহ নগনাহ । তদন্তব , এক দিন এক ভাঙা পহাড় পব চনি গেনাহ তহ দোসব রন মে প্ররেশ কেনাহ । তদন্তব , পৈঘ ভাঙা কেঁ সিঁহ খা গেননি আ ছোট কে সাঁপ ডসি নেনকনি । এহি পকাব দ্বন্ব মহাপাপী এক হি দিন মবি গেনাহ । যমদূত দ্বন্ব কেঁ যমপুবী নহ নেগাহ আ যমবাজ সঁ কহখিন - ধর্মবাজ ! হম অপনেক আজ্ঞানুসাব দ্বন্ব ভাঙা কে নহ অননহুঁ অছি । আর আজ্ঞা দেন জাও জে কিনকা কৌন কাম দেন জায ? যমবাজ যমদূত সঁ কহননি - এক ভাঙা কে নবক মে ডানি দিঅও আ দোসব কে সূক্ষ্ম নোক মে । যমবাজক আজ্ঞা সুনি যমদূত পৈঘ ভাঙা কে নবক মে ডানি দেনখিন আ ছোট ভাঙা কেঁ সূক্ষ্মনোক মে । ঈ সুনি রিকুণ্ডনক মন মে ৱঁড় হর্ষ ভেননি মুদা রিস্মিত ভ২ যমদূত সঁ পুছনখিন - দূত শ্রেষ্ঠ ! হমবা মন মে একটা সঁদেহ অছি জে পুছি বহন ছী । হম দ্বন্ব ভাঙা এক হি ক্ষন মে জন্ম নেনহুঁ , কর্ম সেহো একহি বঁগ ছন , একহি বঁগ দেহারসান ভেন ; তহন কৌন কাবণ সঁ হমব পৈঘ ভাঙা কে নবক মে ডানন গেন আ হমবা সূক্ষ্মনোক মে ? অহাঁ হমব এহি শঁকাক সমাধান করু । হম কখনহুঁ পুণ্য কর্ম নহি কেনহুঁ অছি । জোঁ অহাঁ হমব কোনো পুণ্য কর্ম জানৈত ছী তহন হমবা ৱঁতাউ ।

ঈ সুনি রিকুণ্ডনক মন মে ৱঁড় হর্ষ ভেননি মুদা রিস্মিত ভ২ যমদূত সঁ পুছনখিন - দূত শ্রেষ্ঠ ! হমবা মন মে একটা সঁদেহ অছি জে পুছি বহন ছী । হম দ্বন্ব ভাঙা এক হি ক্ষন মে জন্ম নেনহুঁ , কর্ম সেহো একহি বঁগ ছন ,একহি বঁগ দেহারসান ভেন ; তহন কৌন কাবণ সঁ হমব পৈঘ ভাঙা কে নবক মে ডানন গেন আ হমবা সূক্ষ্মনোক মে ? অহাঁ হমব এহি শঁকাক সমাধান করু । হম কখনহুঁ পুণ্য কর্ম নহি কেনহুঁ অছি । জোঁ অহাঁ হমব কোনো পুণ্য কর্ম জানৈত ছী তহন হমবা ৱঁতাউ ।

দেব দূতক বাঁত সুনি বিকুণ্ডলক ভাঙা কেঁ বঁড় দুঃখ ভেলনি ।ও দীন আ বিনীত ভাব সঁ কহলখিন - সাধো ! সপ্রেক্ষক সঁগ মাত্র সাত ডেগ চলনা সঁ দোস্তী ভহ জাযত অছি । অহাঁ মিত্রভাব সঁ হমরা পর একটা উপকার করু । হম অপনেক সঁ উপদেশ সুনহ চাহৈত ছী । অহাঁ সর্বজ্ঞ ছী,তেঁ কৃপা কহ বতাউ জে কোন কর্মক অনুষ্ঠান সঁ যমলোকক দর্শন নহি হোযত অছি আ কৌন কর্ম সঁ লোকনি নবক মে জাওত অছি ?

দেবদূত কহলনি - জে মন ,বচন আ কাম সঁ কখনহুঁ কোনো অবস্থা মে দোসবা কেঁ দুঃখ নহি পহুঁচাবৈত ছথিন ,ও যমলোক নহি জাযত ছথি । অহিংসা পবম ধর্ম অছি , অহিংসা শ্রেষ্ঠ তপ অছি ,আ অহিংসা কেঁ মুনি লোকনি সদিখন শ্রেষ্ঠ দান বঁতৌলনি অছি । জে লোকনি দযালু ছথি ,ও মছব,সাঁপ ডাঁস ,উডিস আ মানুষ কে এক বঁগ দেখৈত ছথিন । ও অপন জীবিকাক লেল জলচব আ থলচব জীবক হত্যা কবৈত ছথিন, ও কালসূত্র নাম সঁ নবক মে জাযত ছথি । ওহি ঠাম হুনকা কুকুকুবক মাউস, পীব আ খুন পিবহ পডৈত ছৈন । ও চর্বীক কীচ মে অধোমুখি কীঠ সঁ উসন জাযত ছথি । অন্যাব মে এক দোসব কেঁ খাযত ছথি ।এহি অবস্থা মে ভযংকব চীক্কাব কবৈত এক কল্প বহৈত ছথিন । তকব বাদ স্থাবব যোনি মে সময বাঁতীত কবৈত ছথিন । অন্ত মে মানুষ যোনি মে জন্ম সঁ আন্হব , কান,কুবঁড় ,পঙ্গু , অঁগহীন ভহ জাযত ছথি ।

জে কেও দুনু লোক মে সুখক ওচ্ছা বাখৈত ছথি , হুনকা লেল উচিত অছি জে এহি লোক আ পবলোক মে মন, বচন আ কর্ম সঁ কখনহুঁ জীবক হিংসা জুনি কবী। হিংসা কবহবালা লোকনি দুনু লোক মে কতহু সুখ নহি পাবৈত ছথি । জে কেও জীবক হিংসা নহি কবৈত ছথি , হুনকা কতহু ডব নহি হোযত চৈন । জেনা সব নদি সাগব মে মিলৈত অছি ,তহিনা সব ধর্ম অহিংসা মে লয ভহ জাযত অছি । জে কেও এহি লোক মে সব জীব কেব অভযদান কেলে ছথি , মানু ও সব তীর্থ মে স্নান কহ লেলনি আ সব যজ্ঞক দীক্ষা লহ লেলনি । বর্ণাশ্রম ধর্ম মে বহি শাস্ত্রোক্ত আজ্ঞাক পালন কবহবালা সব জিতেঁদ্রিয লোকনি সনাতন ব্রঁবহ্মলোক পাবৈত ছথি। জে ওষ্ঠ আ পূর্ত মে লাগল বহৈত ছথি , পঁচযজ্ঞক অনুষ্ঠান কবৈত ছথি,জে বিষয সঁ নিবৃত্ত,সামর্থ্যশালী ,বেদবাদী আ অগ্নিহোত্র পবাযণ ছথি ও লোকনি সূক্ষ্মগামী হোযত ছথি । শত্রু সঁ ঘেবলো বহলা পব জিনকা মুঁহ পব কখনহুঁ দীনতাক ভাব

নহি আবৈত অছি , জে শূবরীব ছথি,জে সঁগ্রাম মে মবি গেন ছথি,জে অনাথ স্ত্রী , ব্রাহ্মণ আ শবণাগতক বক্ষাক নেন অপন রঁনি দই দৈত ছথি ,পঁগু, আন্হব,রঁচা , বৃঁঢ,অনাথ,বোগী আ দবিদ্রক পানন পোষন কবৈত ছথি , ও সদি খন সুন্ধ মে আনন্দ সঁ বহৈত ছথি । জে কাদো মে ফঁসন গায আ বোগ সঁ রাথিত ব্রাহ্মণ কে দেখি ম্নকব উঁঅম্নাব কবৈত ছথি , জে গায কে চাবা দৈত ছথি , গাযক সেরা কবৈত ছথি আ গাযক পীঠ পব কখনঙ্গঁ নহি রৈসৈত ছথি ,ও সুন্ধনোক রাসী হোযত ছথি । জে রাঁভন সর দিন অগ্নিপূজা,দেরপূজা,গুরুপূজা আ দ্বিজপূজা মে তৎপ্ব বহৈত ছথি , ও সুন্ধনোক জাযত ছথি ।

ওনাব আ পোখবি আদিক প্বণ্য কখনঙ্গঁ কম নহি হোযত অছি ; কিএক তহ ওহি ঠাম জনচব আ থনচব জীর অপন ওচ্ছান্বসাব পানি পিবৈত অছি ।পানিক আধাব পব জীরক প্রাণ ঠিঁকন বহৈত অছি । পাপী নোকনি সেহো সর দিন স্নান কহ পরিত্র ভহ জাযত অছি । ভোবক স্নান রাঁহবী আ ভীতবী সর মন কেব নাশক হোযত অছি । প্রাতঃ স্নান সঁ নিষ্পাপ নোকনি কখনঙ্ক নবক মে নহি জাযাত ছথি। জে কেও স্নান নহি কবৈত ছথি, দের পীতব সঁ রিমুখ বহৈত ছথি,ও অপরিত্র মানন জাযত ছথি আ ও নবক ভোগি কীঁট যোনি পাবৈত ছথি ।

জে কেও পারনি দিন নদীক ধাব মে স্নান কবৈত ছথি , ও নহি তহ নবক মে জাওত ছথি আ নহি তহ নীচ যোনি নে জন্ম নৈত ছতি । ম্ননকা নেন অধনাহ সপনা আ চিন্তা নিষ্ফন ভহ জাযত আছি । জে কেও পৃথ্বী, স্বরর্ণ আ গায আদি কেব সোনহ রেঁবি দান কবৈত ছথি , ও সুন্ধ নোক মে জাযত ছথি আ ওহি ঠাম সঁ ঘুবি কে নহি আবৈত ছথি । রিদ্বান নোকনি প্বণ্য তিথি মে,ব্যতীপাত যোগ মে আ সঁক্রান্তি মে নহা কহ থোড়রঙ্ক দান কবৈত ছথি , ম্ননকা দ্বঙ্গতি নহি হোযত ছৈন । জে নোকনি সহরাদী,মৌন,প্রিযরওা ,ক্রোধহীন, সদাচাবী ,দযারান সঁতোষী ছথি, ও নবকক যাতনা নহি ভোগৈত ছথি । জে নোকনি জিতেঁদ্রীয আ মিতাহাবী ভহ সর তীর্থ মে স্নান কবৈত ছথি ,ও যমবাজ নগ নহি জাযত ছথি । তীর্থ মে কখনঙ্ক পাপী নহি রঁনী, তীর্থ কেব কখনঙ্গঁ জীরিকাক সাধন নহি রঁনারী ,তীর্থ মে দান নহি নী আ ওহি ঠাম ধর্ম নহি রেঁচরাক চাহী । তীর্থ মে কএন গেন পাপক নাশ ভেনাও কঠিন অছি ।তীর্থ মে স্বীকাব কএন গেন দান কে পচেনাঙা অসঁভর অছি।

..............শৈষ আগিনা অঁক মে

অপন মঁতব্য editorial.staff.videha@gmail.com পব পঠাউ।

২.৪.নান দের কামত-ভুজর্ষ্বিতা



নান দের কামত

ভুজর্ষ্বিতা

করিরৰ ৰাজ কিশোৰ মিশ্র ৰচিত নর পোথী ভুজর্ষ্বিতা জে মৈথিনী খণ্ড - কার্য্য ছী, পঢ়ৰাঁক সৌভাগ্য প্রাপ্ত ভেন ঋছি। পোথী এক এহন জটিন রিষয পৰ নিখন গেন ছৈক,জে মৈথিনী সাহিত্য নেনে টাঁ নহি ৰৰন্ হিংদী জগতমে সেহো ঐ তৰহক পোথীক খগতা ছৈক। ভুজর্ষ্বিতা নামে সঁ স্বষ্পষ্ট বুঁঝাএছ জে এ ঊর্জা'ক রিরিধ ঋনচ্ছখন

প্ৰসংগ সঁ পাঠককেঁ পৰিচিত কৰেৰাঁক এক সফল পৰিযাস হোএত। ৰিজ্ঞান কেঁ নৱ - নৱ খৰিষ্কাৰক মৈমনোমে ৰৰদান কহল গেল ঠৈক তঁ ওহিক প্ৰযোগকে দুষ্পৰিণাম সঁ ক্ষতি দেখি খভিশাপ সেহো সময পৰ কহল গেল হল্। এহি ধৰা ধাম পৰ জে প্ৰদুষণ য খা সে নভ তথা সমুদ্ৰমে সেহো ঠৈক, জহনকি মানৱ ঙৰ্জাষ্টা সংঠীত চাহৈত খছি। ৰিষযক গম্ভীৰতা পৰ চৰ্চা কৰয সঁ পূৰ্ৱ খপনে সৱঁ পাঠকক সমক্ষ ৱা কহৰাঁক য জে ড্ৰজৰ্স্বিতা'ক প্ৰকাসক ৰচনাকাৰ শ্ৰী মিশ্ৰ জী স্বঁয ছথি জে 2024 ৱা০ ম ভাৰতমে ছপল য। এহিকে খাৱা এস ৱী এন -978-93-341-0960-3 ভেষ্টলনি খা পোথীকেঁ দাম দুসয ষ্টাকা নিৰ্ধাৰিত কযলে ছথি। খাকৰ্ষক খা মোষ্টগৰ ছপাৱা সঁ নৱ সাক্ষৰ খাওৰ ৱৃদ্ধ পাঠককেঁ খূৰঁ ভাৱৈত ঠৈক। খনেকোঁ পুৰস্কাৰ সঁ সম্মানিত কৰিৰৰ মহোদযকে হিন্দীমে খণ্ড কাৱ্য - ঙৰ্জা ৰৰ্ণন, প্ৰদুষণ পুৰধ্কৃত পোথী ছন্হি। দোসৰো পোথী হিনক খণ্ড কাৱ্যমে যথা- সংৱেগ , জনসংকষ্ট ৰঁহৰা চুকল ছন্হি। মাতৃভাষা মৈথিলীমে 19 গোষ্ট পোথী হিনক প্ৰকাশিত ভ' চুকল ছন্হি, জাহিমে ৰেঁসীতৰ কৰিতা সংগ্ৰহ কেৰ পোথী ঠৈক। খণ্ড কাৱ্য ড্ৰজৰ্স্বিতা সঁ পূৰ্ৱ "জঁ জগ জন নহিঁ হোৱত" নিকলল ৰহনি। সদ্যপ্ৰকাশিত মৈথিলী খণ্ড কাৱ্যকে পোথী ' ড্ৰজৰ্স্বিতা ' মেঁ চাৰি ভাগ খছি,যথা- ড্ৰজাক পৰীচয ও মহত্ত্ব , পাৰংপৰিক ঙৰ্জা - স্ৰোত, নৱীকৰণীয ড্ৰজা - স্ৰোত, ঙৰ্জাক ৰঁচিত ও সংৰক্ষণ খা ঙৰ্জা খাওৰ পৰ্যাৱৰণ। কৰিৰৰ ৰাজ কিশোৰ মিশ্ৰ জীমে ঙৰ্জা কূষ্ট কূষ্টকে ভৰল ছন্হি। খা ও স্বযঁ ৰিদ্যুত ৱী. ষ্টেক. ৰাৰাণসী সঁ কযলে ছথি। মুখ্য মহাপ্ৰৱঁধক (ৰিদ্যুত) ভাৰত সংচাৰ নিগম নিমিষ্টেড সঁ খৱকাশ গ্ৰহণ কয এখলো খূৰঁ ঙৰ্জাৱান ৰহি সাহিত্য সেৱা ম ৰত ছথি। কৰি জী

মিথিলাঁচল প্রক্ষেত্রক মধুৰ্বনী জিলা অন্তর্গত অড়েৰ ডীহ কেৰ নিরাসী ছথিন। অপনা মাঁটি-পানি সঁ সবোকাৰ ৰাখি দিলী এন সী আৰ ক্ষেত্রক ৰহরাসী ৰঁনি গেলাহ অছি।

ঐ সৃষ্টিমে গজোতক অনিরাৰ্যতা আ তাহিমে ৰৌতকা অন্ধাৰকে ধরল শুক্ল পক্ষ সদা ৰঁনল ৰহয সে কৃষ্ণ পক্ষক গুজগুজ তিমীৰকে হটাকেঁ কোনা মাসোভৰি গজোৰিযা সন্ ছিটকৈত দেখাএত সভ্যতা। তাহি লেল ডিবিঁযা, লালটেন ,মশাল আ ঢেৰা সঁগ কযল গ্রজোত কেৰ জগহ নিৰন্তৰ গৈসৰঁত্তী আ রিঁজলী ৰঁল্ব কৰৈত ৰহয,তকৰ জড়িধৰি অপন রিচাৰ কাৰ্যধাৰামে প্ররাহিত কযলাহ অছি। পাঁতি দেখূ -:

..... সোনদ্দল স্বৰূজক উদ্যোত,
ধরল কতে চন্দ্র - জ্যোৎস্না?
স্রষ্টা , জোতি - দেরতা,ৰচলনি,
রিঁনা গজোতক সৃষ্টি কোনা?

মানরীয সভ্যতাক আৰম্ভিক সময সঁ সূৰ্য - চন্দ্র আ তাৰা সঁ মেঘ,রৰখা আ রাতি় সঁ তথা পাত্র সঁ পাথৰক টকৰাহট ও গাছ বৃক্ষকে ৰগড়ঘস সঁ তথা রাযূ- রিঁহাৰি সঁ উৰ্জা পেযৰাঁক লোক আভাস নগৌলনি। প্রাগৈতিহাসিক কাল কেৰ রাদ জহল মানর রস্ত্র ধাৰণ কৰরঁ সীখ দেলনি তঁ অপনা দেহ সঁ রস্ত্র রঁহাৰ কৰৈত এক চৰ- চৰ- চৰ- শৰ্দ্দট ধ্বনি সুনি পৰেখলনি জে উৰ্জা ৰূপেঁ জানল গেলৈক। এখনো ভোতিক ৰূপে অপনা সৰঁ শৰীৰক রস্ত্র রঁহাৰ কৰৈত ঘৰী এক তৰহক রস্ত্রমে রিদ্যুত অকানৈত ছী। চুম্বকীয রিদ্যু৲ পৰীক্ষণ লেল সুখদ কেস কহীঁ রা ঝৰনী সঁ থকৈৰ কেঁ ছোট- ছোট কাগতক টূকৰীমে কংঘীকেঁ স্পৰ্শ কৰরৈঁয সঁ ফৰাকে ও টূকৰা স্বত: উপৰ উড়ি সটি জাগ্রছ। তেঁ করি অপনা

কল্পনাকে যথার্থ পৰক সজীৱ চিত্র এহি পাঁতিমে গঢ়লनि अछि -
:
ঊর্জা জঁ নহিঁ হোতত,
সভ্যতা কথি পৰ কৰৈত সিঁগাৰ ?
তেন ৱিঁনা জেনা দীপ ও ৱাঁতী
ভ' জাতত অছি ৱেঁকাৰ।
তেঁ কৰি অতিতমে নিহাৰি দেখৈত ছথি,জোঁ ঊর্জা'ক ৱৈকল্পিক ওৰিযান নৈ ভেন ৰহৈত তঁ আধুনিক যুগমে পেট্রোনিযম ৱনৈৰ ৱাযুযান আ কোযনা, ডীজন অথৰা ৱিজুনী ৱিঁনু ৰেনগাড়ী কোনা চনৈত গন্তব্য ধৰি! কন কাৰখানা , জনসংচাৰ আ গন্টৰনেট সঁ ৱিশ্বকে গাম- নগৰ অনজানে ৰহি জাতত। সৃষ্টি কেৰ ভীতৰ নৱ অৱিধকাৰক ৱঁনেঁ নৱ সৃষ্টি সেহো কাযম ভেন অছি। তৈযো ৱিজ্ঞান আগূ ৱঢ়ৈত নিত্য দিন প্রৌদ্যোগিকী - ৱিস্তাৰ সঁ জন সুখ - সুৱিধা নির্মাণ ভ' ৰহনৈক অছি। সৱ তকনীকী যন্ত্রকে ৰঠৈতা মনুখ খুদে ছথি, ওহী ঊর্জা ৱঁনে মংগন গ্রহ পৰ যান - প্রজ্ঞান চানধৰি টহনি ৰহনৈথ হন্। কৱিজীক পাঁতিক গৰহৈন দেখন জাএ -:
সৃষ্টি কে ভীতৰ যংত্রসৃষ্টি ,
ৰচি দেনক অছি মানৱ,
সাম্প্রতিক সুৱিধা ৱিঁনা,
কহু কতেক সভ কানৱ?
দেহাতী গনাকামে গিৰহত আ জোন আৱ যান্ত্রিক পৰ নির্ভৰ ভেন জাতত অছি। স্বচানিত ঔদ্যোগিক সংযংত্র সঁ পৰিৱর্তন সর্বত্র দেখাতত ছৈক। কৱিজী নিৰানা অংদাজমে কৱিতা সৃজিত কযনাহ অছি -
:
হগ্গা মে নহি আৱ ৱঁড়দ,

ट्रैक्टरसँ खेत जोतैत अछि,
नहि गीत गाबि रोपनिहारिनि ,
यंत्र धान रोपैत अछि।

गमछा, ओढ़ना, कंबल, कुरता,
मशीन बुनैत अछि टनक टन,
घर बनाबैछ विश्वकर्मा सन,
कथि लेल कोनो खुशामद - खेखान?

एकटा दोसरो पाँति देखू -:
कंप्यूटर अछि आबो कमाल,
दुनियाँभरि पसरल नेट- जाल।
नदी- समुद्र पर बान्हल पुल,
परिस्थिति बना लेलक अनुकूल।
करिजीक नजैर आबो आगू जीराश्मम एवं नाभिकीय ऊर्जा पर विशद् रूपेँ गेलैन अछि।
कथाकार -कवि जगदीश प्रसाद मंडल जीके सैकड़ो मैथिली साहित्य पोथी बहराएल छैन, मुदा एकोटा एहन नहिं जाहिमे चाह केर चर्चा नहिं भेल होय! से कोनो शिर्षक कविताम बिन्नु चाहक चर्चा श्री मिश्र जी कोना नै कबितथि। कहलो गेल छैक - ककरा न तोहर चाह- चाह! पाँति द्रष्टव्य अछि -:
सुनगैत कोनो आगि पर ,
डधिया रहल अछि अदहन,
भफाएत चाह लेल चौक पर,
थहाथहि लोक करैत जखन।

ঐ কোযনাক ঙপযোগিতা অনেকো ক্ষেত্ৰমে হোগচ্ছ, ঐ কে মিঝাএন পথৰচ্ছৃনা ৰাঁনা কোযনা সঁ হম 1984 ঞ্চ0 মে ৰস্ত্ৰ পৰ গম্ভী কৰৈত ৰহী,যে এন্থৰাযাগড কোযনাক তাঙ সঁ কম নহিঁ হোয। কতেক নে ৰিঁযৈন হোঁকিযৈ জে হাথ দ্খা জাগত ৰহয। আৰ্ তঁ ৰিঁজনী হিংৰ আ যংৌৰ কে জগহ গৌয দ্বনহা সঁ কাজ চনৈত য। কৰিজী ৰঁঢ় নিম্ন পাঁতিক সৃজন কেনৈথ হন্ -:

জ্বনি কহিযো কোগনা একৰা,
ঞ্চ অছি ' কাৰী হীৰা' ,
গযহ ত' ৰিদ্যুত - আপূৰ্তি নেন,
ঙঠা নেনে অছি ৰীড়া ।

অঁধাধুঁধ কোযনাক খপত আ কোনযৰীক খানমে নাগন আগি মিযেৰাঁমে কতেকো মাস- যান নাগি জাগচ্ছ,জাহি সঁ ভঁডাৰণ শেষ হোগত চনি জা ৰহনৈক হন্ । আজুক যময এহন দ্ৰুতগামী ভেন জা ৰহন অছি জে প্ৰাযঃ পৰিৰাৰ যাগকিন কেৰ জগহ আৰ্ মোটৰযাগকিন যৰাৰ ' গেন চ্চৈক। ঞ্চঁধন পেট্ৰোন ৰূপেঁ আ গৌয যিনেংডৰ ৰূপেঁ ঙপযোগ কৰৈত চ্চৈক। পেট্ৰোন -ডিজন ভাৰত কচ্ছাতেন আযাত কয ৰিফাগনৰী কৰৈত পৰিশ্ৰুদ্ধ তেন পেট্ৰোন পম্প পৰ ঙপনব্ধ কৰাৰৈচ্ছ। আটো আ যীটী ৰিক্শা গাম-গামমে ঘনেৰো আৰিঁ গেন চ্চৈক। ৰোৰীংগ--পম্পযেট আ আঁটা হানৰচকী যভ যেহো চনৈত চ্চৈক কিৰাশন তেন আ ডীজন পৰ যে খপত ধৰনে সঁ যমযকে আৱশ্যকতা থীক। যাদ্ৃ পৰ ৰাঁৰীক সঁ কৰিজীক নজৈৰ স্নকী দেননি অছি -:

কক্কা চঢ়না মোটৰযাগকিন,
স্নকো নিত চাহিঐঁন্থ পেট্ৰোন,
ৰেনগাড়ীক গংজন কে চাহী,

ভবি দিন ডীজন ডোনে- ডোন ।

ডীজন - গঁজন - জনৰেষ্টৰ,
খাফিস , হোষ্টনে - মখান ম,
তকৰ পোখ মে ডীজন চাহী ,
তখন চনত ডীন-ডৌন মে।

সাংসাৰিক জীরনো রঁঠ় কঠিনাহ চনৈক। ভোৰগৰে পতা খৰবি কয , তাহি জৰনা সঁ ভনসা হোয। পসাহী নগা পৰ পঠিয়া হৰামে খগনী সঁ ষৌন গাম জৰিএ সভ্রাহ ভ' জাগ্রক। রঁনগোগঠা গোৰহা খা কাঁচ চেহৰা সঁ ভৰিঘৰ ধুখাঁ,ছোষ্ট মোকৰাঁ একচাৰীমে খাঁচ ফূঁকি কোনহা পজাৰৈত মহিনা মেহেৰক খাঁখি জন্দীযে ৰোগগ্রস্ত ভ' ডঠৈক। কতেকো পতাখড়ৰনী ৎৰৰৰ মিহানী কেঁ পঠিম গামক মিযাঁজী খপহৰণ কয ধর্ম পৰিরর্তন কৰা নৈ চনে। মে ধনিকেষ্টা জে সাংসদ সঁ গৈস মিনিংডৰ নৈত ৰহন তঁ খাৰঁ দেখিযৌ নে মৰকাৰী নিযম সঁ হৰমঠে মৰঁ কিযো ডজানা গৈসচূন্হী ন' নেনে য। করিজীকেঁ এহনেমে করিতা ফূৰাগ্রত চনি -:

হে গৈ মোঁমীৰাঁনী ! নহি হম
জেরৌ খনৰোখে খড়ৰয পাত,
গৈস-চূন্হা , কখিক' চিন্তা?
ডঠরৈঁ হম জখন হেতৈ পৰাত।

কবি জী খপন কবিতামে পৰমাণ্ব ডর্জা সঁ ন' কে' খা গোৰঁৰ গৈস প্লাংষ্ট তথা শৌচানয গৈসরঁত্তী ধৰি ডপযোগ কৰৈত দেখেনাহ। প্রগ্রুতি সঁ জে যূৰেনিযম খযস্ক খা ৰেডিযোধর্মী রিকিৰণ কেৰ পারৰ হাডস চৈক তকৰ ডপনৰ্দ্ধি পৰ হার্দিক ৰূপ সঁ খূশী মনারৈঁত চথি -:

নাভিকীয় ৰিএক্টৰ সঁ উধমা,
উধমা সঁ ভাফ চনাৱেঁ টৰৱাঁগন,
টৰৱাঁগন ঘূমাওত জেনৰেটৰ কে,
আএনি ৱিঁজ্বৰী! গাৱঁথু গীতগাগনি।

জতয উৰ্জা ৱেঁৰাঁক,আ সহী তৰীকা সঁ ডেৰঁৰাঁক হোতা,ততয সৱঁ তৰহক উৰ্জাক' স্রোত ৰঁনন ৰহয সে করিজীক অভিধষ্ট ছন্থি। মৈথিলী সাহিত্য কেৰ অক্ষয ভংডাৰ কেঁ ভৰৱাঁমে হিনক অভূতপূর্ব যোগদান কেঁ ৱিঁসৰন নহিঁ জাএত। তেঁ এহি বৃহদ গ্রন্থ কেঁ সৱঁ পুস্তকানযমে ৰহৱঁ অতি আৱশ্যক অছি,জাহি সঁ নৱ পিঢ়ি পঠি লাভ ৰঠা সকত। প্রস্তুত পোথীমে সাৰাংশ ৰূপেঁ শ্রী মিশ্র জী আৰম্ভমে 'অৱতৰণিকা' নিখৈত পাঠকবৃংধ সঁ আশিৱঁচনক অপেক্ষা কেনে ছথি। এহনে অথক পৰিশ্রম সঁ আৰো পোথী নিখতাহ সে আশ জগৈত অছি।

-নান দেৱ কামত মো0 ৭৩২১২৯০৭৩১

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.৬.আশীষ অনচিন্হাৰ- সাহিত্য অকাদমীমে নৈতিকতা-সংদৰ্ভ মৈথিলী প্রভাগ-ৱিশেষ সংদৰ্ভ নচিকেতাজীক কাৰ্যকান



আশীষ অনচিন্হাৰ

সাহিত্য অকাদমীমে নৈতিকতা-সংদৰ্ভ মৈথিলী প্ৰভাগ-রিশেষ সংদৰ্ভ নচিকেতাজীক কাৰ্যকাল

জেনা কি পহিলে কহলে ছী রিদেহমে লগাতাৰ ২০০৮ সঁ এখন ধ
ৰি সাহিত্য অকামদীক মৈথিলী প্ৰভাগপৰ ভেল নীক-
ৰেঁজাএ কাজপৰ লিখল গেল ছৈ। তাহি সংদৰ্ভমে ফেৰ আগ হ
ম লীখি ৰহল ছী। রস্তুতঃ সমযক সংগ সাহিত্য অকাদমীমে মৈথি
লী প্ৰভাগক নৈতিকতা লিচ্চে জা ৰহল অছি, খাস কই এখন
ভাষারিদ্ উদয নাৰাযণ সিংহ 'নচিকেতা' জীক নেতৃত্বমে তঁ অকা

দমীক নৈতিকতা আৰ নিষ্ঠা গেন অছি। একৰ একটা টটকা উ দাহৰণ দেখল জাএ- ৭ ফৰৱৰী ২০২৯ কেঁ অকাদমীক এক কাৰ্য ক্ৰম ভেল জাহিমে ৱিদ্যানংদ ঝা এৱং সুভাষ চংদ্ৰ যাদৱজীক ৱাঁতচীত ভেল। জে মৈথিলী সাহিত্যমে ছথি তিনকা সভকেঁ ঈ বুঝল হে তনি জে ৱিদ্যানংদ ঝা এৱং সুভাষ চংদ্ৰ যাদৱ দূনূ ৱঁকাযদা সাহিত্য অকাদমীক টীমমে সেহো ছথি। হমৰা জনৈত ঈ উচিত নহি ভে ল। অকাদমীক সদস্য ছোড়ি আন লেখককেঁ লেল জেৱাঁক চাহী ছল, মুদা প্ৰশ্ন ৱএহ ফেৰ ফেৰ নৈতিকতাক।

নচিকেতাজীক কাৰ্যকালমে ৱএহ সভ ভই ৰহল অছি জে পহিলে সঁ হোগত আৰিঁ ৰহল অছি। কোনো পৰিৱৰ্তন কোনো নৱ ৱা কোনো সুধাৰ নহি। ৱঁল্কি নৈতিকতাক মামিলামে নিচিকেতা জীক কাৰ্যকাল আৰো ৱেঁকাৰ সাৱিঁত হএত। নিষ্ঠামে অকাদমী ক উক্ত কাজক ফোটো দেল জা ৰহল অছি।







लेखक से संवाद

साहित्य अकादेमी

द्वारा

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2025

के अंतर्गत आयोजित

प्रतिष्ठित मैथिली साहित्यकार

सुभाष चंद्र यादव

से सुपरिचित मैथिली लेखक

विद्यानंद झा

की बातचीत

सुनने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं

शुक्रवार, 7 फ़रवरी 2025, अपराह्न 3:00 बजे

स्थान : हॉल नं. 5, स्टॉल नं. ए-13,
प्रगति मैदान, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुस्तक प्रदर्शनी एवं बिक्री
हॉल नं. 2 एवं 3, स्टॉल नं. एल-9 एवं
हॉल नं. 5, स्टॉल नं. ए-13

उत्तरापेक्षी : 011-23386626-29
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓒.𑓓.𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪-𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒚𑓀𑒜𑒰 𑒗𑒰 𑒥𑒢𑒰𑒧 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒫𑒱𑒠 𑒑𑓂𑒩𑒱𑒨𑒩𑓂𑒮𑒢

: মিথিলা ভাষা/ অশোক বাটিকা মে সীতা সংগ বার্তা ভাষা বনাম মানুষী ভাষা (মৈথিলী)



আচার্য ৰামানংদ মংডল

মহাকবি চংদা ঝা বনাম ভাষাবিদ গ্রিয়র্সন : মিথিলা ভাষা/ অশোক বাটিকা মে সীতা সংগ বার্তা ভাষা বনাম মানুষী ভাষা (মৈথিলী)

১

মহাকৱি ঠঁদা ঝা ৱঁনাম ভাষাৱিদ গ্রিযর্সন : মিথিলা ভাষা

মহাকৱি ঠঁদা ঝা কে জন্ম পিঁডাৰুঠ (দৰভঁগা) মে ১৮৪১ঞ মে আ মৃত্যু ১৯০৭ঞ মেঁ ভেল ৰহয।হুনকৰ মুখ্য কৃতি মিথিলা ভাষা ৰামাযণ (১৮৯২)হয।পৰঁঠ মিথিলা মেঁ হুনকৰ ৰামাযণ কে ৱাঁৰে মে মিথিলা অঁজান হয। এঁহা কে সঁত মহাত্মা আ কথাৱাচক সেহো অঁজান নহৈত হয। মিথিলা মে একাহ নৱাহ মেঁ সঁত তুলসীদাস কৃত ৰামচৰিতমানস কে পাঠ হোএএ হয জে অৱধি মেঁ হয।

এতিহাস ৱঁতৱৈঁয হয কি মহাকৱি ৱিদ্যাপতি কে ৱাঁদ মহাকৱি ঠঁদা ঝা মৈথিলী কে ৱিকাস মেঁ যোগদান কৈলন।পৰঁঠ মিথিলা কে ৱিদ্বান হিনকা উপেক্ষা কৈলন।

মৈথিলী কে ৱিকাস মেঁ অঁগ্রেজ পদাধিকাৰী ভাষাৱিদ গ্রিযর্সন কে মহত্ত্বপূর্ণ যোগদান হয।হুনকৰ জন্ম১৮৩১আ মৃত্যু ১৯৪১মে ভেল ৰহয।ৱো ১৮৭০মে ভাৰত অযলন।ৱো ভাৰতীয ভাষা সৱেক্ষণ (১৮৯৮) কৈলন। সৱেক্ষণ ৰিপোর্ট ২১ভাগ মে হয।জেমেঁ ১৭৯ ভাষা আ ৯৪৪ ৱোঁলী কে ৱিস্তাৰ সে ৱর্ণন হয।হুনকৰ মৈথিলী সাহিত্য মে মৈথিলী গ্রামৰ (১৮৮০),সেৱেন গ্রামর্স আফ দী ডাযলেক্ট্স আফ দী ৱিঁহাৰী লৈঁগ্ৱেজ (১৮৪৪-১৮৮৭). কে ৱিশেষ মহত্ত্ব হয।

এঁহা মহত্ত্বপূর্ণ এ হয কি ৱর্তমান মৈথিলী ভাষাৱিদ কহৈত হতন কি ভাষা কে গ্রামৰ হোএ চৈয পৰঁঠ ৱোঁলী কে গ্রামৰ ন হোএ চৈয। জ্ঞাতৱ্য হোয কি কালব্রুঁক মিথিলা কে ভাষা কে মৈথিলী নাম দেলন আ জার্জ গ্রিযর্সন মৈথিলী কে ক্ষেত্র নির্ধাৰণ কেলন।

কহৈন জাগত হয কি মহাকরি চঁদা ঝা মৌথিনী কে ক্ষেত্র ঋা ভাষা -রোঁনী কে নির্ধাৰণ মে জার্জ গিৰিযর্মন কে ভাৰী মহযোগ কৈনন।পৰঁচ প্রশ্ন উঠয কি জোঁ মিথিনা কে ভাষা কে নাম মৌথিনী নির্ধাৰিত হো গেন ৰহয ত মহাকরি চঁদা ঝা ঋপন কৃতি ৰামাযণ কে নাম মিথিনা ৰামাযণ ঋা মৌথিনী ৰামাযণ কে রঁদনে মিথিনা ভাষা ৰামাযণ কাহে ৰখনন।কি জনকা নগনৈন কি মিথিনা কে ভাষা মৌথিনী কুচ্ছ রর্গ কে ভাষা হয। রাস্তর মে মিথিনা কে ভাষা মিথিনা ভাষা ত রঁহুসংখ্যক কে ভাষা হয। মিথিনা ভাষা ৰামাযণ মিথিনা কে ভাষা(মৌথিনী , ঋংগিকা, রঁজ্জিকা, মুৰজাপুৰী ঋাদি) ঋর্থাত মিথিনা ভাষা কে পৰিচাযক হয।

২

ঋশোক রাটিকা মে মীতা মঁগ রার্তা ভাষা রঁনাম মানুষী ভাষা (মৌথিনী)

রাঁন্মীকি ৰামাযণ কে ঋনুমাৰ -

ঋহঁ হ্যতিতনুশ্চৈর রানৰশ্চ রিশেষতঃ।
রাচঁ চোদাহৰিষ্যামি মানুষীমিহঁ মংস্কৃতাম্॥১৭।

এক ত হমৰ শৰীৰ ঋত্যঁত মূক্ষ্ম হয, দোমৰ হম রানৰ চী। রিশেষতঃ রানৰ হোকে হম এঁহা মানরোচিত মংস্কৃত -ভাষা মে রোঁনরৈঁয।

যদি রাচঁ প্রদাস্যামি দ্বিজাতিৰির মংস্কৃতাম।

ৰারণং মন্যমানা মাঁ সীতা ভীতা ভরিষ্যতি॥১৮

পৰংত্তু এহন কৰে মে একটা বাঁধা হয, জোঁ হম দ্বিজ কে ভাঁতি সংস্কৃত -ৰাণী কে প্রযোগ কৰবৈঁ ত সীতা হমৰা ৰারণ সমস্ম কে ভযভীত হো জতৈয।

অরশ্যমের রক্তর্য়ং মান্বষং রাক্যমর্থরৎ।
মযা সান্ত্বযিতুং শক্যা নান্যথেযমনিন্দিতা।
।১৯॥

এহন দশা মে অরশ্যে হমৰা রোগ সার্থক ভাষা কে প্রযোগ কৰে কে চাহী জে অযোধ্যা কে আসপাস কে সাধাৰণ জনতা বোঁলৈয হয,ন ত ও সতী সাধ্বী সীতা কে হম উচিত আশ্বাসন ন দে সকবঁ।

হনুমান জী সংস্কৃত আ অযোধ্যা কে লোক ভাষা কে লেল মান্বষ ভাষা কে প্রযোগ কৈলৈ হতন। সংস্কৃত কে লেল বিদ্বান মনুষ কে ভাষা আ সাধাৰণ লোগ কে লেল মান্বষ (লোক) ভাষা।অগমে মিথিলা আ মৈথিলী ভাষা কে কোন্ৰ চৰ্চা ন হয।

-গোৰখপুৰ প্রেস সে প্রকাশিত বাঁল্মীকি ৰামাযণ কে আধাৰ পৰ।

-আচার্য ৰামানংদ মংডল সীতামঢ়ী।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.प्रणव कुमार झा-जतय मोन ततै हम(लघुकथा)



प्रणव कुमार झा

जतय मोन ततै हम(लघुकथा)

काशी नगरी मे दू टा संगी रहै छलाह मोहन आ अमित। दुनू गोटे मे घनिष्ठ मित्रता छलैन्ह। रहनाय-खेनाय, हँसनाय-काननाय सभटा एक्के संगे होय छलैन्ह। एक बेर के गप्प ऐछ, बाबा विश्वनाथ के दरबार मे एकटा बड़का कीर्तन के कार्यक्रम भ रहल छल। त दुनू संगी निचारलैथ जे "की दोस, अपनो सब चलैत छी आजु रातत मइ बाबा के दरबार मे कीर्तन करबाक लेल।"

দ্বনূ মংগী নিযাৰন মময পৰ ৰাঁৰাঁ ৰিশ্বনাথ কে দৰৰাঁৰ মেঁ হাজিৰী নগাৰঁয নেন ৰিদা ভেনাহ। ৰাঁষ্ট মেঁ একষ্টা গণিকা কে কোঠা ছনৌ। ও দেখ মোহন কে মোন ভষ্টকৈ নাগন ছন। ও ৰাঁজনে - যৌ মীতা মন্ব নে ৰাঁৰাঁ ৰিশ্বনাথ ত শতাব্দী মে এত্তহি ছগ্রথ। কোনো ভাগনে ত জা নৈ ৰহনাহ খছি! খা কীর্তন ভজন ত চনতে ৰহৈত খছি, মে কিএক নে খাগ্র ৰাতি এহি গণিকা কে দৰৰাঁৰ মেঁ জা ক নহৰিযা নূষ্টনে জায হী হী হী।

গ মনি খমিত স্নকা ৰোঁকিযাৰৈঁত ৰাঁজনাহ - গ্রহ! শিৱ॥শিৱ॥শিৱ॥শিৱ। চননষ্ট খছি ৰাঁৰাঁ দৰৰাঁৰ মেঁ হাজৰী দেৰঁয নেন খা ৰাঁষ্ট মেঁ গ পাপী ৰঁনা কাজ কৰৰঁ! এহন ৰিচাৰ খহাঁ মোন মে খানৰোঁ কোনা কেনক? গ্র মৰঁ নৈ হৈত। চুপচাপ চনৈ চন্ব ৰাঁৰাঁ দৰৰাঁৰ মেঁ।

মদা মোহন কে মোন ওহি কোঠে পৰ টঁগ গেন ছন। ও ৰাঁজনে জে - ঠীক ছৈ মীতা। তখন এনা কৰৈ ছি জে খহাঁ কীর্তন মেঁ ভেনে খাৰ্ড হম তা ঐ গণিকা কে এত নহৰিযা ন্বষ্টৈত ছি। ভোৰ মেঁ খহাঁ হমৰা গ মামনে জে পূন ৰঁনি ৰহনে খছি এহি তৰ মেঁ ভেঁষ্ট হৈৰঁ ফেৰ মংগে ঘৰ চনৰঁ।

খমিত ৰঁজনাহ জে জোঁ খহাঁ কে যৈহ ৰিচাৰ খছি ত যৈহ মহী, তখন হম ৰঁঢ়েত ছি ৰাঁৰাঁ দৰৰাঁৰ দিম। গ কহি ও ৰাঁৰাঁ ৰিশৱনাথ কে মঁদিৰ দিম ৰিদা ভেনাহ খা মোহন ওয গণিকা কে কোঠা দিম।

মংদিৰ পহুঁচনা কে বাঁদ অমিত কীর্তন মেঁ শামিল ভেলাহ আ কীর্তন কৰয লগলাহ। মুদা হুনকৰ মোন ওয গণিকা কে কোঠা পৰ অটৈক গেলৈন। যামনে ত কীর্তন চলি ৰহল ছল মুদা হুনকা আঁখি কে আগাঁ মেঁ ওয কোঠা কে কাল্পনিক দৃশ্য ঘৰ্ব নাচয লাগল। ও মোনে মোন অপনা আপ কে কোসয লাগল জে ওহ! হমহুঁ ৱড়কা ৱূড়ি আদমী ছি। ওম্হৰ মোহনা ওয গণিকা কে এতয নহৰিযা নুষ্টৈত হেতৈ আ হম ৱূড়ি খষ্টহিদাস এতয আৰিঁ ৰঁগোৰ খোষ্টৈত ছি। এহি প্রকাৰ ভৰী ৰাতি অমিত কে দেহ ত ৱাঁৱাঁ কে দৰৱাঁৰ মেঁ ছল মুদা মোন ওয গণিকা কে কোঠে পৰ নষ্টকল ৰহলৈ।

এম্হৰ মোহন ওয গণিকা কে কোঠা পৰ ত পহুঁচ গেল মুদা কিছুএ ছণ ৱিঁতলা পৰ ওকৰ মোন ওকৰা ধিক্কাৰৈ লাগল। জো ৰে পাপী! এহন অধম তূঁ ভেলেঁ জে চলল ছলেঁ ৱাঁৱাঁ ৱিশ্বনাথ কে দৰৱাঁৰ লেল আ পহুঁচ গেলহি এহি পাপ কে অড্ডা পৰ। ওম্হৰ ও মীতা অমিত ৱাঁৱাঁ কে দৰৱাঁৰ কে মনোৰম ছটা কে আনংদ লৈত হেতৈ, কত্তেক সুন্দৰ কীর্তন হোগত হেতৈক আ হম পাপী এতয মুজৰা সুনি ৰহল ছি। হে ৱাঁৱাঁ ৱিশ্বনাথ হমৰ ঐ অপৰাধ কে ক্ষমা কৰৱঁ! ঐ প্রকাৰে মোহন কে দেহ ত যগৰ ৰাতি ওয কোঠা পৰ ৰহলৈ মুদা মোন ৱাঁৱাঁ ৱিশ্বনাথ পৰ টঁগল ৰহলৈ।

ভোৰে ভেলে দুনূ সংগী ওয পূল কে নীচা ভেঁষ্ট ভেল জতয দুনূ নিযাৰলে ছল। দুনূ গোষ্টে ভেঁষ্ট ভেলা কে বাঁদ জখন অপন অপন আপবীতি খিস্সা সুনৱৈঁ ছল তখনে দেৱযোগ সঁ ও পূল টূষ্টি গেল আ

कएअेक टा लोक संगे गेलो दुनू संगी कान के गान में समा गेलाह। यमक दूत जखन हिनका सभ के लेबय लेल एलखिन त मोहन के स्वर्ग दिस आ अमित के नर्क दिस लय बिदा भेलाह। ऐ पर अमित के घोर अचरज भेलैन। ओ दूत से पुछलखिन जे यौ महाराज जखन हम दुनू संगी के रहनाय-खेनाय, हंसनाय-काननाय सभटा एक्के संगे होय छलै त एकटा के स्वर्ग आ एकटा के नर्क नइ जाय के निर्णय कोना कैल गेल?

ऐ पर दूत कहलाह जे देखू मृत्युक समय व्यक्ति के आचरण केहन होएत छैक यम न्याय में एकर बड्ड महत्त्व छैक। ई सुनि अमित के मुस्कायल चेहरा पर खुशी के भाव आबि गेलैन आ ओ कहलाह - आह! तखन अवश्ये अहाँके किछु धोखा भेल। ई मोहना राति भरी ओय गणिका के कोठा पर छल अनैतिक काज में लिप्त छल आ हम राति भरि बाबा विश्वनाथ के दरबार में कीर्तन करैत छलहुँ। तै हिसाबे हम स्वर्ग आ ई नर्क के भागी अछि।

ऐ पर यमदूत अट्टहास करैत कहलन - यौ बाबू, तों भरि राति बाबा के दरबार में छलें मुदा तोहर मोन ओय गणिका के कोठे पर टाँगल छलौ, मुदा मोहन ओय गणिका के ओतय रहितो भरि राति बाबा विश्वनाथ के स्मरण करैत रहल। यौ प्राणी के मोन जतय रहैत छै ने प्राणी ओतय रहैत छै। मनुक्ख बुद्धिजीवी प्राणी होएत छैक आ तें ओ प्रत्यक्ष किछु आर आ मोन में किछु आर भ सकै अछि। जानवर सभ में विवेक कम होएत छैक तें ओकरा मोन में रैह रहैत छै जे प्रत्यक्ष देखाइ पड़ै छै। तें

মন্দক্ষক মূল্যাংকন হম সবঁ ঐ বাঁত সে কৰৈত ছি জে ওকৰ মোন-বিচাৰ কোন প্ৰকাৰ কে ছৈক।

-প্ৰণব ঝা, ৰাষ্ট্ৰীয পৰীক্ষা বোঁর্ড, নভা দিল্লী

[প্ৰণব কুমাৰ ঝা, ৰাষ্ট্ৰীয পৰীক্ষা বোঁর্ড, নভা দিল্লী, জনৱৰী 2025]

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.৫.কুন্দন কর্ণ- ডেৰা



ৎক্ষন্দন কৰ্ণ

ডেৰা

ৎট্রেন নেষ্ট ছল, গাম পৰ্হুঁচৈত 11 ৰাঁজি গেল।
ঘ'ৰ পৰ্হুঁচলৰ্হুঁ ত দেখৈত ছী ওগৰৰাঁহ মাঘো ৎখা পনিচোভরানী হমৰ কোঠনীমে পলংগ পৰ সূতন ৎখছি। দেখিক' হালোচান নহি প্বছলক। এহন সপৰতীর !!

"জাহ, তোঁসৰঁ ৎখমোৰা পৰ সূতহ, ভোৰমে গপ্প কৰৈত ছিযৎখ"।

ৎখহাঁ ৎখমোৰা পৰ সূত্তগৎখ , ৎখাৰঁ ৱা ঘ'ৰ হমৰে ভেল, নানাজীসৰঁ ঘৰ ছোড়থিন ত জে ৰহতৈক তকৰে লে ঘ'ৰ ভেলৈ"
মোনত ভেল এক এঁড় ... মৱদা ৰঁযসক নেহাজক' ঠূপ ৰহলৰ্হুঁ, কহনিযৌ সূতহ ভোৰমে গপ্প কৰৰঁহ।
নিম্ন খূজল ত দ্ব্ন নহি ছল।তমতমাযল ওকৰ ৎখাঁগন পৰ্হুঁচি ৰাঁহৰেসঁ হাক দেনিযৈক, ওকৰ প্বতৰ্হু ৰঁহৰেনৈ ৎখা ৰাঁজল
"কিনকা হাক দৈত ছথিন মানিক , ৰূঁঢ়ৰাঁ ৰূঁঢ়িযা ত পৰুকেঁ ৰাঁঢ়িমে ভাসিযা গেনৈক, ৰঁৰখিযো ভেলৈ !!

ৎখপন মঁতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

২.৯.নির্মনা কৰ্ণ- গোগঠা মে ঘী স্বখাযৰঁ



নির্মলা কর্ণ

গোগঠা মে ঘী স্বখাযৰ্

"কনিযাঁ,ঋাগ ৰুঁঠী ৰেঁষ্টী কেঁ কনি নীক মs তৈযাৰী কs দেৰেঁ। ঋাগ্ৰ ৰৰাগত মৰ্ ৰুঁঠী কে দেখগ নেন ঋাৰিঁ ৰহন ঋছি। মৰ্ কিছু তয ভs গেন ঋছি ৰঁম ৰুঁঠী পম্নিৱ ভs জাযহ্ন তখন গংগা নহা নেৰ্ " - মোহন ৰাঁৰূঁ ঋপন প্ৰতণ মংগীতা কেঁ কহনেথি। .

-তখন ৰিৱাহ তs নিঠীতে ৰুঁঝু! হমৰ ৰুঁঠী এতেক স্বন্নৰ ঋা মংস্কাৰী ঋছি!ওহি পৰ গংষ্টৰ! ঋা ওহো ৰিজ্ঞান ৰিষয মোঁ পাম ঋছি। ওকৰা পম্নিৱ নহি কেনাগ্ৰ ঋমম্ভৱ ঋছি.. দাদী মেহো প্ৰমন্নতা মোঁ ণমকি কs ৰঁজনীহ।

"ম্বদা ৰাঁৰূঁজী! হিনকা তs ৰুঁঝন ছন্হি জে ৰুঁঠী মেডিকন কে প্ৰৱেশ পৰীক্ষা ঋতেক নীক নংৰঁৰ মোঁ পাম কেনেক ঋছি। ওকৰা এম্‌ম ভেষ্ট ৰহন ঠৈক । এহন স্থিতি মেং ঋাৰ্ এহি মময ওকৰ ৰিৱাহ কৰৰ্ উচিত ৰহতন্হি ? ৰিৱাহক ৰাঁদ কোনা পঢ়াগ্ৰ ক' মকত ও ?"- মংগীতা, কনেক মশ্কচাগতঋপন ৰিচাৰ মাস্ব ঋা মস্বৰক মমক্ষ ৱ্যক্ত কেনথি ।

"ঋৰে! কনিযাঁ কতৰ্ণ পঢ়ত,ৰুঁঠিযা কেঁ তs ভানমে কৰ' পঢ়তৈক ! ওণনা গ্ৰ হমৰা মভক ঘৰ মেং তs ৰহত নহি, দোমৰহি ঘৰ মেং

जायत! तखन गोगठा मे घी सखयना सँ की लाभ!"

"नहि बाँबूजी,बूँठी दिन-राति एक कएने छल मेडिकल प्रवेश परीक्षा में सफलता हेतु । आर ओकर पाँखि नहि कतरबँ। आकाश में उड़ान भरs दियौक एकरा । हम अपन सरँ किछु बेँठ देर मुदा ओकरा डाक्टरी अरँमे पढ़ायबँ। डाक्टर बनि कs ओ अपन गामे नहि संपूर्ण क्षेत्र के नाम उजियार करत.. अपन आफिस जाउ नेन निकलैत कान दनकर बेँटा मोहन माय, बाँबू आ अपन घरनीक गप्प सुनि कs अपन निर्णयक घोषणा कs देलथि।

दादा-दादीक बाँत सुनलाक बाँद बूँठीक खून सखs लागल छलन्हि,आर अपन बाँबू के निर्णय सुनलाक बाँद आसक दीप दनक नेत्र में प्रज्वलित होमय लागल।

-निर्मला कर्ण, राँची, झारखण्ड

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

২.১০.ডা বিদ্যা নাথ ঝা- স্বর্গ কেহেন ? নর্ক কেহেন ?



ডা বিদ্যা নাথ ঝা

স্বর্গ কেহেন ? নর্ক কেহেন ?

স্বর্গ-নর্ক কে জন-অৱধাৰণা

কিযো প্রাণী অপন জীৱন মেং নেঁ তঁ স্বর্গ দেখনে হেতৈ নেঁ নর্ক। তৈযো কোনো এহন ব্যক্তি নহিং ভেটৈত জিনকা স্বর্গ বা নর্ক মেং পঠাএবঁ কে ধমকী, সুঝাৱ যা প্রেৰণা নহিং দেন গেল হোএএ ও চাহে খিন্ন ভাৱ বা তামস মেং হী কিএ নৈ দেন হোএএ। আদি কাল সঁ মানৱ কে মন-মস্তিষ্ক মেং স্বর্গ ৱ নর্ক কে এক অৱধাৰণা বঁনাওল গেল অছি কি ও কেহেন হোএত। ও অৱধাৰণা কে অনুৰূপ অধিকাংশ ব্যক্তি কে মোন মেং লালসা ভ সকৈছ কি স্বর্গ কে দর্শন দ্বাৰৈ বা ওহি ঠাম কে ৱিলাসিতা মেং ৰহএ কে অৱসৰ

भेटैए । विवने ही किछो एहन व्यक्ति हएत जे स्वर्ग के प्रसिद्ध नर्तकी उर्वशी या मेनका के नाम नहिं सुनने हएत ।ओना यदा कदा किछो किछो प्राणी केँ अपन जीवन मेँ ही एहन लागय भ सकैछ जे स्वर्ग के अप्सरा के नृत्य देख सकी । तँ मोटा मोटी इ मानूँ जे जौँ केयो केँ स्वर्ग जाए के लागय भेल तँ कोनोँ आश्चर्य नहिं होवाँक चाही । दिक्कत आवै छै ओ लोकोक्ति पर जे 'अपनाहिं मरणोपरांत स्वर्ग देख सके अछि" । तँ जौँ स्वर्ग देखे लेल मरए पड़त तँ लोकनि अपन अपन पाँव पाछू करि लेतन्हि ।

विवने कोन्हों एहन धर्म ग्रन्थ अछि जाहि मेँ स्वर्ग वा नर्क के वर्णन नहिं होवए । वाँलपन सँ ही सुनल छलन्हि जे सुकर्म व कुकर्म के फल क्रमशः स्वर्ग व नर्क मेँ होए छैक । मुदा सुकर्म आ कुकर्म की होए छैक इ ज्ञात नहिं रहए । तहिनहिं ओहो ज्ञान नहिं छल जे स्वर्ग की होए छैक आओर नर्क की ? हाँ ! गाम घर मेँ इ सुनैत छलन्हि जे मृत्यु पश्चात् श्राद्ध कर्म सँ स्वर्गलोक के प्राप्ति होए छैक । कवँन्हि कवँन्हि काकी काका केँ अन्यान्य व्यक्ति केँ कोयगत सुनैत छलन्हि जे फलाँ केँ हुनक कुकृति के कारण नर्क मेँ सेहो जगह नैँ भेटैत । तखन मोन मेँ स्वतः आवैँ छल जे इ तँ वँढियाँ वाँत भेल जे जौँ नर्क मेँ जगह नैँ भेटैत तँ स्वर्ग के द्वार तँ स्वतः खुजि जाएत । आ सेहो विँना श्राद्ध कर्म केने ।

वाँल्यावस्था के अवोंधपन मेँ सुकर्म वा कुकर्म के वोंध नहिं रहए । अपन भोलापन मेँ एक वेँर अपन वँड़की काकी सँ इ रहस्य

পূছিএ লেলন্হি জেকৰ পৰিণাম ই ভেল জে সভ্ভু স্ত্ৰীগণ কে হঁসী কে পাত্ৰ বঁনি গেলন্হি। তৎপশ্চাত স্বৰ্গ নৰ্ক কে বিষয মেঁ কোন্হি সঁ পূছৈ মেঁ এক ধাখ সন লাগৈ লাগল মুদা মোন মেঁ অনেকোঁ প্ৰশ্ন উঠৈ ছল। পহিল প্ৰশ্ন ছল জে স্বৰ্গ, নৰ্ক কতএ অছি ? কী দোনোঁ কোনোঁ দূৰ প্ৰান্ত মেঁ আজ্ঞ বাঁচূ অছি ? ই আকাশ মেঁ অছি কি পাতাল লোক মেঁ ? আকাশ মেঁ স্বৰ্গ যা নৰ্ক কে ঘৰ-আঁগন বিঁনা জমীন কে কোনা টিকতই ? আওৰ জোঁ ই পাতাল মেঁ অছি তঁ অৱশ্য ধৃগযাঁ সঁ সেহো নীচাঁ হেতগ। তঁ ফেৰ জল মেঁ ডূবঁল কেও স্বাঁস কোনা লেত ? ও ঠাম তঁ অন্হাৰ সেহো হোতৈ। তঁ স্বৰ্গ কোন বাঁত কে ?

নেঁ। এনা নহিঁ ভ সকৈছ। স্বৰ্গ অৱশ্য আকাশ কে প্ৰকাশ মেঁ হোতৈক আ নৰ্ক পাতাল কে অন্হাৰ মেঁ। তঁ হথিযা যা চিত্ৰা নক্ষত্ৰ মেঁ ঝমাঝম বৰ্ষা মেঁ সভ্ভু লোকনি ভীজ জেতাহ। ওতএ তঁ প্ৰচঁড বিঁজ্বৰী কে কড়ক মেঁ সবঁ ডৰ সঁ ভাগি জেতাহ। ই সভ্ভু কে অতিৰিক্ত খূজল আকাশ কে তেজ হৱা-বঁসাত মেঁ কিযো কোনা ৰহি সকৈছ ? ওহিনহিঁ মোন মেঁ আএল জে জোঁ নৰ্ক পাতাল মেঁ ঠৈক তঁ পানী মেঁ ডূবঁল দম ঘুটি জাএত। তঁ নহিঁ তঁ কোনো ব্যক্তি বা যমৰাজ মহাৰাজ ওহি ঠাম ৰহি সকৈছ। তঁ আখিৰ স্বৰ্গ নৰ্ক কতএ বঁসল অছি ? এহি সবঁ মোন মেঁ দেৰ দেৰ তক আৱিঁ জাএ ছল আ ও চিঁতা কে ক্ষণ মেঁ বাঁবূঁজী (হমৰ পিতা) কে আঁখি হমৰা পৰ পড়ল। ও পূছি লেলন্হি জে কী বাঁত ? পিছলা অনুভৱ, জেহি মেঁ স্ত্ৰীগণ কে হঁসী কে পাত্ৰ বঁনল ৰহোঁ, কহলেক জে চুপ ৰহূ, সে কিছু বাঁজৰ উচিত নহিঁ বূঁঝলন্হি আ মেঁপল আঁগল চলি গেলন্হি। মুদা মোন মেঁ স্বৰ্গ নৰ্ক কে জিজ্ঞাসা অনৱৰত বঁনল

ৰহনে ।

স্বৰ্গ-নৰ্ক কে প্ৰামাণিক অৱধাৰণা

রিদ্যাধ্যযন মেঁ স্বৰ্গ কে সন্দৰ্ভ মেঁ ভগরান ৰাম কে কথন পঢ়াওন গেন "জননী জন্মভূমিশ্চ স্বৰ্গাদপি গৰীযসী" জে তাহি রাঁনকান মেঁ রুঁঝএ মেঁ নহিঁ আএন কি হমৰ জন্মভূমি আওৰ মাঁ, স্বৰ্গ সঁ কোন ৰূপেণ শ্ৰেষ্ঠ ভেন ? জন্মস্থান হমৰ গাম ঘৰ তঁ অদনা সন ৰহএ । অড়োস পড়োস সে অভারগ্রস্ত চনৈক । হমৰ রাঁন্যকান মেঁ হী মাঁ কে দেহাঁত ভ গেন চননি সে পূৰ্ণতযা জ্ঞান নহিঁ ৰহএ কি জননী জন্মভূমি কেঁ স্বৰ্গ সঁ কোনা তুননা কএ সকে চী । অড়োস পড়োস মেঁ পুৰুষ নোকনি কে শ্ৰমী দিনচৰ্যা, স্ত্ৰীগণ কে সংঘৰ্ষপূৰ্ণ জীরন যাপন আওৰ নৈনা ভুইঁকা সভক অকমৰ অভারগ্রস্ত রাঁনপন কেঁ স্বৰ্গ কহএ মেঁ অরশ্যমের কৰি রাঁন্মীকি সঁ গনতী ভেন হোএত; সে অপন অনুমান চন ।

প্ৰাথমিক, মাধ্যমিক ও উচ্চ রিদ্যানয মেঁ পঢ়এ কে দৌৰান স্বৰ্গ র নৰ্ক কে অনগ অনগ পৰিকল্পনা কেনহুঁ । ফেৰ কিছু পুস্তক ও পাঠ্যক্ৰম মেঁ গহো রোঁধ কৰাওন গেন জে স্বৰ্গ ও নৰ্ক, দুনূ এহী ঠাম অছি জেকৰ ভোগ নোকনি অপন অপন জীরন কে অনগ অনগ কানখংড মেঁ কৰৈ চথি । তঁ মোটামোটী ঈ কহি সকে চী জে অপন পুস্তক ও পাঠ্যক্ৰম মেঁ আধ্যাত্মে রোঁধ নহিঁ কে ররাৰৰ অছি জে ভাৰতীয শিক্ষা প্ৰণানী মেঁ এক রড কমী যা চূক কহি সকে চী । স্নাতক র স্নাতকোত্তৰ কে পঢ়াঈ, তৎপশ্চাত সশস্ত্ৰ সেনা র রাযব্য অংতৰিক্ষ রৈজ্ঞানিক সেরা কে দৌৰান রিঁসরি

গেল ছলহুঁ কি স্বৰ্গ কতএ বা নৰ্ক কতএ। অপন ধৰ্ম-গ্ৰন্থ জেনা পুৰাণ ব উপনিষদ গহো বোঁধ কৰাবৈত অছি জে ভূ-লোক (পৃথ্বী) কে উত্তৰ মেং স্বৰ্গ লোক ব দক্ষিণ মেং মৰ্ত্য লোক অছি মুদা একৰ ভৌতিক বা বৈজ্ঞানিক প্ৰমাণ অদ্যাৱধি নহিং দেল গেল অছি। আধুনিক অংতৰিক্ষ বিজ্ঞানং সঁ ই তঁ প্ৰমাণিত অছি জে দোনোং দিশা মেং অনেকোং উপগ্ৰহ দশকোং সঁ পৃথ্বী সঁ ৪০০ সঁ ২000 কিলোমীটৰ ঊপৰ অনৱৰত পৰিক্ৰমা কএ ৰহল নেংস যা বৈজ্ঞানিক সংৱেদক (scientific sensors) মেং কোনোং এহন সংকেত নহিং আওল অছি জাহি সঁ স্বৰ্গ যা মৰ্ত্য লোক কে পৰিকল্পনা প্ৰামাণিক ভ সকএ।

সম্প্ৰতি সেৱা নিৱৃত্ত জীৱন কে অংতিম প্ৰহৰ মেং আধ্যাত্ম কে ব্ৰহ্মাণ্ড ৰুপী বিশাল চেতনা কে পৰম বোঁধ তঁ সংভৱ নহিং অছি মুদা একৰ প্ৰকৃতি কে আভাস নিএ কে এক প্ৰযাস অৱশ্য কএ ৰহল ছী। বৈজ্ঞানিক প্ৰমাণিকতা কে আভাৱ মেং বেদ, উপনিষদ ব পুৰাণ মেং উদ্ধৃত কিছু আধ্যাত্মিক তথ্য কেঁ ব্যক্ত ক ৰহল ছী।

বেদোং, উপনিষদ, গীতা মেং উদ্ধৃত স্বৰ্গ-নৰ্ক

অথৰ্ৱবেদ কে মন্ত্ৰ ৩:১২০:ই মেং যথাৰ্থ স্বৰ্গ কে বৰ্ণন অৱশ্য ভেল অছি জে স্বৰ্গ-নৰ্ক কে ভৌতিক অৱধাৰণা সঁ বিঁলক্ষন অলগ অছি। ই জীৱন কে ও মুদ্ৰা অছি জেহি মেং ভৌতিক কাযা কেঁ কোনোং বিশেষ মহত্ত্ৱ নহি ৰহি জায ছৈক :-

-𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒩𑓂𑒠𑓁 𑒮𑒳𑒏𑒵𑒞𑒼 𑒧𑒠𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒯𑒰𑒨 𑒩𑒼𑒑𑓀 𑒞𑒢𑓂𑒫𑓁 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒨𑒰𑓁। 𑒁𑒬𑓂𑒪𑒼𑒝𑒰 𑒁𑓀𑒑𑒻𑒩𑒯𑓂𑒩𑒳𑒞𑒰𑓁 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒺 𑒞𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒬𑓂𑒨𑒺𑒧 𑒣𑒱𑒞𑒩𑒾 𑒔 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂॥ 𑓖:𑓑𑓒𑓐:𑓓 ॥

𑒋 𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒺 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒮𑓀𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮𑒲 *𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒲 𑒫𑒺𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟* 𑒖𑒲 𑒏𑒺 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒭𑒱𑒣𑓂𑒞 𑒫𑒺𑒠𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒧𑒺𑓀 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒺𑒪 𑒁𑒕𑒱 :-

स्वर्ग किसी देशविशेष (स्थान विशेष) या लोकविशेष का नाम नहीं है, वरन् उस अवस्था को स्वर्ग कहते हैं, जिस अवस्था मे मनुष्य को शारीरिक, आत्मिक, पारिवारिक आदि सब प्रकार के सुख प्राप्त हैं, जिस अवस्था में मनुष्य को कोई शारीरिक क्लेश, मानसिक पीड़ा नहीं सताती, माता-पिता तथा सन्तान का सुख प्राप्त हो, शरीर सुन्दर तथा सुडौल हो, कोई त्रुटि न हो, इसकी प्राप्ति का साधन सद्विचार तथा उत्तम सदाचार है। दूसरे शब्दों में रोग, दुःख, अंग-भंग, कुरूप शरीर आदि पापों का फल है। संक्षेप में 'सुखविशेष भोग तथा उसकी सामग्री' का नाम स्वर्ग है। (यह स्वर्ग मनुष्य के अपने भीतर, अपने निवास, परिवार, समाज व देश में ही होता है व माना जा सकता है। वाल्मीकी रामायण में भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम लक्ष्मण जी से कहते हैं कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' पूरे श्लोक का भाव है कि मैं जानता हूं कि लंका सोने की है परन्तु फिर भी मुझे यह अच्छी नहीं लगती। क्योंकि अपनी माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। यह इसलिए कि जो सुख विशेष अपनी माता और अपनी जन्म व देश भूमि में मनुष्य को प्राप्त होता व हो सकता है, वह अन्यत्र नहीं मिल सकता। -लेखक)

𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒫𑒺𑒠-𑒫𑒺𑒞𑓂𑒞𑒰 **𑒩𑒰𑒧𑒲 𑒮𑒱𑒫𑒰𑒢** 𑒏𑒺 𑒧𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒺 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑-𑒢𑒩𑓂𑒏 𑒏𑒺 𑒁𑒫𑒡𑒰𑒩𑒝𑒰 𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒧𑒺𑓀 𑒇𑒑𑓂𑒫𑒺𑒠 𑒏𑒺 𑒧𑒴𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒳𑒣 𑒏𑒺 𑒫𑒰𑒿𑒠 𑒧𑒺𑓀 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒯𑒰𑒿 ! 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒧𑒺𑓀, 𑒫𑒱𑒬𑒺𑒭𑒞𑓁 𑒑𑒩𑒳𑒛𑓃 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒧𑒺𑓀 𑒋𑒏𑒩 𑒫𑒵𑒯𑒞 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒺𑒏𑒩 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒺𑒬𑓂𑒨 𑒫𑒻𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒏𑒵𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒺𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒢 𑒠𑒺 𑒏𑒺 𑒕𑒪 । 𑒞𑒠𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒫 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒧𑒺𑓀 𑒮𑒠𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒺𑒿 𑒫𑒿𑒜𑓃𑒰𑒋𑒫𑒿 𑒫 𑒠𑒳𑒩𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒺𑒿 𑒂𑒣𑒩𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒫𑒿𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒪𑒺𑒪 𑒏𑒋 𑒑𑒺𑒪 𑒩𑒯𑒋 । 𑒯𑒰𑒿 ! 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒏𑒺 𑒋𑒏 𑒁𑓀𑒬 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒺𑓀 𑒮𑒺𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒺 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑓂 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒏𑒺𑒿 𑒠𑒺𑒪 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒏𑒺 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒭𑒱𑒣𑓂𑒞 𑒂𑒬𑒨 𑒟𑒲𑒏 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒺𑓀 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒏𑒺

অভৌতিক-স্বৰুপ প্ৰতীক অছি :-

"তে তম ভুক্ত্বা স্বৰ্গ-লোকম্ ৱিশালম্ ক্ষীণে পুণ্যে মাৰ্ত-লোকম্ ৱিশন্তি |
এৱং ত্ৰয়ী-ধৰ্মং অনুপ্ৰপন্ন গতাগতং কামকামা লভন্তে || ৯:২১ ||

সনাতনী আধ্যাত্মে মেং অপন অল্পজ্ঞান কে কাৰণ হম সভ্ভ ধৰ্মগ্ৰন্থ ৱ কাৱ্য মেং ৱৰ্ণিত স্বৰ্গ-নৰ্ক কে অৱধাৰণা সঁ অনভিজ্ঞ ছী লেকিন একৰ মতলৱ ই নহিং জে একৰ উদ্ধৰণ অন্যান্য গ্ৰন্থ মেং নহিং হোতে । উক্ত ৱিষয ৱস্তু পৰ অৱশ্য অনেকানেক ৱিদ্বান অনেকোং খোজ কেনে হেতাহ, অনেকোং মত দেনে হেতন্হি জে হমৰ সংকুচিত জ্ঞান কে পৰে অছি । হম এহি লেল পাঠক সঁ ক্ষমা যাচনা কএ ৰহল ছী ।

দেৱ ৰাজ ইংদ্ৰ কে অধীন স্বৰ্গ অছি জাহি মেং সৱ তৰহ কে দেৱোপযোগী প্ৰসাধন উপলব্ধ মানল জাএত অছি । ওহি ঠাম অত্যধিক দেৱ লোকনি কে ৱাস ছৈক আ সুকৰ্ম কৰএ ৱালা মানৱ কে আত্মা কে নিৱাস সেহো এহি ঠাম হোএ ছৈক । ই ৱাঁত উল্লেখনীয অছি জে স্বৰ্গ স্থিত আত্মা কে পুনৰ্জীৱন কে চক্ৰ মেং আৱএ পড়ে ছৈ । অন্যান্য দানৱ লোকনি কে আঁখি ইংদ্ৰ কে সিংহাসন পৰ ৰহএ ছললি জেকৰ চৰ্চা অন্যান্য গ্ৰন্থ মেং অছি । এহি সভ্ভ কে ৱিপৰীত যমৰাজ কে আধীন নৰ্ক লোক অছি জাহি মেং কুকৰ্ম কৰৈ ৱালা ৱ্যক্তি কে প্ৰাণ কে ৱাস হোএ ছৈক । উপনিষদ ৱ পুৰাণ মেং নৰ্ক কে অনেকোং প্ৰকাৰ অছি, কিযো চাৰি নৰ্ক কে উদ্ধৃত কৰৈ ছথি তঁ কিযো বীস । নৰ্ক মেং পাপী জাএত ছন্হি জিনকা তেল

𑒧𑒹𑓀 𑒣𑒏𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕, 𑒐𑒰𑒋 𑒧𑒹𑓀 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰-𑒣𑒱𑒪𑓂𑒪𑒴 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒦𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨 𑒣𑒠𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒍 𑒮𑒳𑒞𑒋 𑒪 𑒏𑓀𑒙𑒱𑒏𑒰 𑒏𑒹 𑒮𑒹𑒖 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 । 𑒢𑒩𑓂𑒏 𑒧𑒹𑓀 𑒯𑒩 𑒞𑒩𑒯 𑒏𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒲𑒛𑓃𑒢 𑒯𑒼𑒋 𑒕𑒻𑒏 𑒂 𑒁𑒫𑒡𑒱 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒯𑒼𑒫𑒋 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞𑓂 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒱𑒋 𑒣𑒛𑓃𑒹 𑒕𑒻 । 𑒔𑒴𑒿𑒏𑒱 𑒄 𑒮𑒦 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒩𑒝 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒧𑒳𑒪𑓂𑒪𑒼 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒦𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒤𑒻𑒪𑒰𑒫𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒱𑒯𑒰𑒠 𑒧𑒹𑓀 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞𑓂 𑒖𑒢𑓂𑒢𑒞 𑒧𑒹𑓀 𑓗𑓒 𑒯𑒴𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒕 𑒮𑒹 𑒫𑒱𑒿𑒪𑒏𑒳𑒪 𑒑𑒪𑒞 𑒁𑒕𑒱*** । 𑒞𑒿 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 (𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒖𑒱𑒯𑒰𑒠𑒲) 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒛𑒞𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒨𑒰 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒞𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒢𑒩𑓂𑒏 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 ।

𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒔𑒏𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒕𑒴𑒙𑒻 𑒪𑒹𑓀 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒹𑓀 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 (𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧) 𑒧𑒹𑓀 𑒪𑒲𑒢 𑒦 𑒖𑒰𑒃𑒕 । 𑒃𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒼𑒢𑒱-𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒫 𑒖𑒢𑓂𑒧-𑒧𑒩𑒝 𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒻 𑒖𑒰𑒋 𑒕𑒻𑒏 । 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒭𑒱𑒣𑓂𑒞 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒦𑒑𑒫𑒠 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒋 𑒮𑒏𑒹 𑒕𑒲 । 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒐𑒻 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢𑒲 𑒫𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒰𑒩𑒼 𑒫𑒹𑒠, 𑒁𑒭𑓂𑒙𑒰𑒩𑒯𑒼 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒞𑒟𑒰 𑓑𑓐𑓘 𑒅𑒣𑒢𑒱𑒭𑒠 𑒧𑒹𑓀 𑒂𑒡𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒣𑒩, 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒏𑒋 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑-𑒢𑒩𑓂𑒏 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒧𑒹𑓀 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒁𑓀𑒞𑒩𑓂𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒪𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒋𑒞 𑒁𑒕𑒱 । 𑒏𑒚𑒼𑒣𑒢𑒱𑒭𑒠 𑒧𑒹𑓀 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒨𑒰 𑒧𑒼𑒏𑓂𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱-𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒫 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧-𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒫𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 ।

𑒅𑒣𑒩𑒼𑒏𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑-𑒢𑒩𑓂𑒏 𑒏𑒹 𑒂𑒡𑓂𑒨𑒰𑒞𑓂𑒧𑒱𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒮𑒿 𑒋𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒦 𑒑𑒹𑒪 𑒏𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒴 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑒩 𑒯𑒲 𑒋𑒏 𑒮𑒰𑓀𑒏𑒹𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒦 𑒮𑒏𑒻𑒕 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒂𑒿𑒔𑒪 𑒧𑒹𑓀 𑒁𑒕𑒱 । 𑒮𑒹𑒯𑒲 𑒂𑒿𑒔𑒪 𑒧𑒹𑓀 𑒢𑒹𑒢𑒰-𑒦𑒳𑒙𑒻𑒏𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒹𑒮𑒰𑒞 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒼𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒂𑒞𑓂𑒧-𑒮𑓀𑒞𑒳𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒏𑒹 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒿 𑒏𑒧 𑒢𑒯𑒱𑓀 । 𑒫𑒰𑒞𑓂𑒮𑒪𑓂𑒨 𑒧𑒹𑓀 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰

ঐ সংতান কে ভগৱান্ হোএ ঠৈক জে কিছু কহৈ ৱিনা ঐ মনকৰ আৱশযকতা বুঝি, ওকৰ নিদান কৰৈ ছথি। ৱান্যাৰস্থা সঁ নিকনৈক পশ্চাৎ আধ্যাত্মে কে ভাৱ সিখৰ-পঢ়ৰ সম্পূৰ্ণ মানৱ জাতি নেন অত্যাৱশ্যক অছি জাহি সঁ নিৰাকাৰ ৱা সাকাৰ ব্ৰহ্ম জ্ঞান কে ৱোধ হোৱএ।

অন্যান্য ধৰ্ম-আস্থা মেং স্বৰ্গ-নৰ্ক

সনাতন কে পুৰাণ মেং ৱৰ্ণিত স্বৰ্গ-নৰ্ক কে দেখা-দেখী, ৱাদ মেং আবৈ ৱানা অন্যান্য ধৰ্ম ৱা আস্থা সেহো একৰ অনুকৰণ-অনুসৰণ কএনে গেনাহ। জহিনা পাৰসী মেং দ্ৱজন্থা আওৰ গৰোডেমন; ঈসাঈ মেং হেৱন আওৰ হেন, ইস্লাম মেং জন্নত আওৰ দোজখ ইত্যাদি... । ইস্লাম মেং তঁ ***স্বৰ্গ-নৰ্ক কে পৰিকল্পনা এক অ-তাৰ্কিক পৰাকাৰ্ষ্ঠা অছি *** । ঈ সভ্ভ একেশ্বৰৱাদী আস্থা মেং স্বৰ্গ-নৰ্ক কেঁ অত্যংত ৱঢ়া চঢ়া কএ এতেক ৱিকৃত ক দেনহনি জে ও আস্থা কে অনুসৰণ কৰ্তা কেঁ স্বতঃ ভয উৎপন্ন ভ জাএ। উদাহৰণতঃ স্বৰ্গ মেং সুৰা ৱ মধু কে নদী ৱহৈত ঠৈক, ৱাটিকা সদৈৱ ফন-ফূন সঁ ভৰন ৰহৈছে, ৱিনাসিতা কে সৱ সাধন উপনব্ধ ৰহৈছে আদি আদি। মুদা জনমানস মেং গনত অৱধাৰণা ৱনি গেন পশ্চাৎ প্ৰাযঃ সভ্ভ ধৰ্ম ৱ আস্থা কে পংডিত, পুজাৰী, পাদড়ী, মুনো আদি একৰা সঁ নাভ উঠাৰৈ খাতিৰ নৰ্ক সঁ ৱঁচাৰৈ তথা স্বৰ্গ মেং পহুঁচাৰৈ হেতু তৰহ তৰহ কে আডম্বৰ ৱ ধৰ্মান্ধতা ৱনৌনন্হি জে তিৰস্কাৰ কে ৱিষয থীক। কৰ্মকাংডী পংডিত পৰ সেহো দোষাৰোপণ অনুচিত হএত কিএ কি কঠোপনিষদ মেং ঐ স্বৰ্গ যা মোক্ষ প্ৰাপ্তি নেন অগ্নি-ৱিদ্যা ৱ ব্ৰহ্ম-ৱিদ্যা কে

प्रावधान कएल गेल अछि ।

सारांश

हम नेँ कोनो आचार्य या पंडित छी नहिँ सनातन के धर्म ग्रन्थ वेद, उपनिषद के ज्ञाता । अतएव उपरोक्त विषय वस्तु मेँ अपन निपुणता नहि रखने छी । मुदा आजु के जनमानस मेँ स्वर्ग-नर्क के प्रति जे गलत अवधारणा देल गेल अछि ओहि सँ चिंतित अवश्य छी । से इ चिंता वाँग्यपन सँ अद्यावधि अछि । जोँ पढ़ल लिखल व्यक्ति केँ एहन अवधारणा बनल अछि तँ एहि मेँ कोनोँ संदेह नहिँ जे साधारण जनमानस मेँ सेहो ओहिनहि धारणा होतउ । अपन मुख्य धर्म-ग्रन्थ वेद व गीता सँ इ प्रतीत होइछ जे स्वर्ग वा नर्क कोनोँ अलग लोक मेँ नहिँ बसल अछि । इ वैयक्तिक व सामाजिक मूल्य के महत्त्व दिए वाला सदाचार केँ बढ़ाबएँ व दुराचार केँ अपराधिक बनाओल गेल पुरातन काल सँ ही एक व्यवहारिक व्यवस्था थीक जेकर अनुकरण बाद मेँ बनल वाला अन्यान्य धर्म व आस्था सेहो कएलक । इ जीवन के ओ मुद्रा अछि जेहि मेँ भौतिक काया केँ कोनोँ विशेष महत्त्व नहि रहि जाय छैक । मुदा जनमानस मेँ स्वर्ग-नर्क के गलत वा अस्पष्ट अवधारणा बनाबँए मेँ किछु योगदान तँ सब्ब धर्म-ग्रन्थ के सेहो भूमिका या योगदान छनि जाहि सँ प्रायः सब्ब धर्म व आस्था मेँ कुकर्मी के मरणोपरांत नर्क मेँ दंड के प्रावधान छन्हि । इ अलग बात छी जे पंडित, पादड़ी, मुल्ला आदि एकरा सँ अर्थ-लाभ उठाबै खातिर नर्क सँ बचाबै तथा स्वर्ग मेँ पहुँचाबै हेतु तरह तरह के आडम्बर व धर्मान्धता बनौलन्हि जे तिरस्कार के विषय

থীক ।

References

* মহান সংন্যাসী স্বামী ৱেদানন্দ তীর্থ জী কে সংক্ষিপ্ত ৱেদৱ্যাখ্যান মেং কএ গেল অছি

অথর্ৱৱেদ মে যথার্থ স্বর্গ কা ৱর্ণন- https://wp.me/p6VtLM-3Qg

**ৱেদোং ঔৰ পুৰাণোং কে অনুসাৰ স্বর্গ ঔৰ নর্ক https://sanatanadhara-com.translate.goog/2020/01/28/heaven-hell-as-per-vedas-puranas/?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

*** 'Busy God Supplying Hoors', https://thecounterviews.in/articles/busy-god-supplying-hoors/

-ডা ৱিদ্যা নাথ ঝা, MBBS, AMD, MD, FeISAM, MIDST, সেৱা-নিৱৃত্ত ৱৈজ্ঞানিক 'F', উপ-নিদেশক, DRDO

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

पद्य

३.१.कल्पना झा- रॅकनेन नय ठेंं

३.२.राज किशोर मिश्र-सभ्यताक भ्रम

३.३.प्रमोद झा 'गोकुल'-सहर्ष मड़ान

३.४.जगदानन्द झा 'मनु'-३० टा हाइकू

𑓒.𑓑.𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰 𑒗𑒰- 𑒩𑓁𑒏𑒢𑒹𑒢 𑒢𑒨 𑒕𑒻𑒿



কল্পনা ঝা

ৰঁকনেন নয ঢ◌ৈ◌ঁ

গে মায তোঁ ৰঁকনেন নয ঢৈঁ,

নে পঢ়নেঁ ?

তযো **২** যৰঁ কিছু গনি গনি ৰখনেঁ,

দহিযা ফুফৰী নাগন পিতৰিযা ৰঁর্তন কে

যোন যন ঠমকৌনেঁ,

তযো**২** কিছু নয ৰঁজনেঁ,

ঘৰ ক ঠিনমাৰি যঁ দনানক

মান যৰঁ দিন ৰখনেঁ,

নেকিন কহিযৌ নয পিতেনেঁ,

ঠম্ভা নগা ঐনা মেঁ নিহাৰি

কতে থপৰি পিষ্টনেঁ,
নেকিন কিনোনো নে কেনেঁ,
কনমা ভৰি তেন মেঁ কোনা ক ৰণনেঁ,
তযোই কিছু নয কহনেঁ,
ভনসা ঘৰ তোহৰ কতে ষ্টা প্রযোগশানা চৱ,
ৰসাযন, অর্থশাস্ত্র, পাক রিজ্ঞান আ চিকিৎসো
সৱঁ মেঁ নিধোৰি ভ পাৰংগত চৈ,
ঘৰ ক কোনি মেঁ নাগন গ্বনাৰঁ
গমকৈত কতে চৈ,
নে নে গ সিনেহক চাপ হোয চৈ,
মায গে তোঁ ৰঁড় ৰুঁঝিযাৰ চৈঁ,
কাঁষ্টক ডৰৈ গ্বনাৰঁ নয চুৰৈঁ চৈ।

-কল্পনা ঝা, ৰোঁকাৰো, ঝাৰখংড

অপন মংতৰ্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাও।**

২.২.ৰাজ কিশোৰ মিশ্র-সভ্যতাক ভ্রম



রাজ কিশোর মিশ্র

সভ্যতাক ভ্রম

সভ্যতাক কে ডেগ বঁঢ়ল,
খোহ সঁ, পাষাণ সঁ,
সিংধু নদী কে তীর সঁ,
কাশীক মহাশ্মশান সঁ।

বঁনবাসী কে পর্ণকুটী সঁ,
কুম্হারক চাক, বাঁসন সঁ,
বাঁসক কনস্পতী, পথিআ সঁ,
রাজা কে সিংহাসন সঁ।

শাংতি-মর্যাদা সৃজন মে,
চণ্ডিকা, দুর্গা সপ্তশতী,
অর্গলা স্তোত্র, দেবী কবচ,

'অসুৰ ভযার্ডনি 'ভগৱতী।

সুৰ-অসুৰক সংগ্রাম সঁ,
পংচরত্নী ,আ' নংকা সঁ,
কুরুক্ষেত্রক চক্রব্যূহ সঁ,
ৰণ মে ৱঁজৈত ডংকা সঁ।

তক্ষশিলাক আচার্য সঁ,
'অর্থশাস্ত্র' কে পন্না সঁ,
ৰাজ-চৌহদ্দী-ৱিস্তাৰ নেন,
ষড্যংত্র-ব্যূহ-ৱঁহল্লা সঁ।

ৱেদ-ঋচা সঁ, ত্রিপিটক সঁ,
ৱৰাহমিহিৰক খগোল-জ্ঞান সঁ,
আর্যভট্টক দশমলৱ-খোজ সঁ,
ৱিজ্ঞানক শোধ, অনুসংধান সঁ।

কোন হাৱাঁ কতয সঁ আএল ?
পূৱঁ ভৰ সঁ কি পচ্ছিম সঁ,
মিজহৰ ভ**ই** ক**ই** ঘমল সভ্যতা,
জে জমল ৱঁড় চ্ছল হিম সঁ।

জীৱনশৈলীক নৱ-নৱ সিদ্ধান্ত,
সভ লোগল অপল পসাৰ মে,
ঋষি-মুনীঔঅনি ৱাঁত-ৱিচাৰক,

নহि ककरো किও मম্হাৰ মে।

কৈক্ষ্টম-ধাধৰ मँ ভানৰি কাঁপন,
ডিক্সো ৰেৰাঁড়ন , মোহৰ ,
খেত ছোড়ি চাঁচৰি পড়াএন,
খ্ৰিপন পৰ খ্ৰংৰেজী মোহৰ।

চনৈত ৰহন চিতকৰঁড়া মভ্যতা ,
একপেড়িখা ,কখনো ৰাজ-পথ,
ৰঁনৰামী, মহানগৰ মে কখনো,
ভীষ্ম কখনো ,কখনো জযদ্ৰথ।

হমৰা নাগি ৰহন খছি ও তঁ
চৌৰঁষ্টিখা পৰ ঠাঢ় খছি,
নান-হৰিখৰ ভেন মিগ্নন,
ভ্ৰম-মান্দ্ৰতা ৰঁড় গাঢ় খছি।

মীৰধ্বজ জনক মনক ও
ৰঁনি গেন খছি ৰিদেহ ,
শেযৰ ৰঁজাৰক মেহো ওকৰা
খছিনৰে ঠৈক মিনেহ।

মিৰাৰ্ডৰ পাঢ়ৈত, হৰৰাঁহক ঠুৰৈত ঘাম মে,
ঝুন-গোত্ৰ মঁ ,পৈৰৰী মঁ পাওন নাম মে।

সূগরক খোভাড় সঁ কিকিএবাঁক গর্দ-অনঘোন মে,
কার-শোরূমক ভীতর মে,মর্সিডীজ-এয়বক মোন মে।

মোহাবঁরা, নোকোক্তি মে,
গঢ়ন জনজীবনক সিদ্ধাঁত,
হোইন মে তই বিনাোকস-ইঁগম,
আ' খোপড়ী মে মাসাঁত।

রামলীলা-মঁডলীক বিঁনৌকী মে,
সিনে-জগতক আভা-ভৌকী মে।

পস্যাহনি কএনে অর্থতঁত্র,
মোহাএন ওহি পর সভ্যতা,
রাজতঁত্রক ঐশ্বর্য-বৈভব,
আ' প্রজাতঁত্রক ভব্যতা।

ধর্মদণ্ড ,আবঁ সঁবিধান,
জনতা অছি সভ সঁ মহান।

ধনুষ-বাণ সঁ ল' ক' পরমাণবিক অস্ত্র,
গাছক ছাল সঁ ল' ক' আধুনিক বস্ত্র।

পুষ্পক সঁ মঁগল আ' চঁদ্রযান,
সভ্যতাক গরুড়বাহন, বিজ্ঞান।

ঋনুষ্টুপ্ কিংৱা মুক্তছন্দ,
সভ্যতা-মন মে রঁগত দ্বন্দ্ব।

পীতাম্বৰ খাওৰ জীঁস রীঠ,
তুৰুছেন, ৰভ্যেন মোন,
কখনো ঞা, খা' কখনো ও,
দ্বরিধা মে, ঠাহী কোন?

ভ**ই** গেন ছৈ ওকৰা খধকপাৰি
ঙঠন ছৈ ঘৰ মে রিঁড়ৰো -রিঁহাৰি।

কোমহৰ নিকসতৈ চৌরঁষ্টিখা সঁ?
চনতৈ কহিখা?
ভৰমাএন মন সভ্যতাক,
ঘুমতৈ কোন পহিখা?

খপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

३.३.প্ৰমোদ ঝা 'গোকুল'-মহৰ্ষ মড়ান



প্ৰমোদ ঝা 'গোকুল'

মহৰ্ষ মড়ান

ৰবি ৰাতি ৱিঁতায কতৌ ভোৰে উগলা শুক ।
হুঁহ হুঁহ ৰূপ নিৰখি ননিনী ৱাঁজনি দূ হূঁক ॥
ককৰা মঁগ ভেনৈ জগৰনা জে ৰূপ এহন খঙোৰ ।
ৰাতি ভৰি হম কনৈত ৰহনৌঁ খাৰঁ পোঠে ঠী নোৰ ॥
জাৰ্ড হম নঞি ৰঁজৈ ঠী জ্বনি দিক কৰূ হমৰা ।
বূঁঝি পড়ৈযে ভেনৌঁ খহূঁ খাৰঁ চিত চোৰা ভমহৰা ॥
শংকা কৰূ নিৰ্মূন প্ৰিযে !জীৱন মে কহাঁ ৱিশ্ৰাম ।
দিন ৰাতি দহ দহ কহ কহ এতয ওতয মৰঁ ঠাম ॥
মেন্বৰী কিৰনক স্পৰ্শ মুখ পৰিতহিঁ ৱিহাঁসনি ননিনী তত্কোন ।
পঞ্চম স্বৰ মে কোগনী ৱাঁজনি গূঁজি উঠন মহৰ্ষ মড়ান ॥

- প্ৰমোদ ঝা 'গোকুল', দীপ, মধুৱনী (ৱিহাৰ) ফোন-9871779851

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.जगदानन्द झा 'मनु'-२० टा हाइकू



जगदानन्द झा 'मनु'

बीसटा हाइकु

बीसटा हाइकू

१

वीणा धारिणी

कमल विराजनी

बुद्धि दिअ माँ

२

হে মাঁ সাৰদে

হমৰো জ্ঞান দিঅ

হম অজ্ঞানী

৩

মহাকালিকা

হমৰ কুল দেৱী

কল্যাণ কৰু

৪

হে মহাকালী

শৰণ এলোঁ হম

ৰক্ষা কৰু মাঁ

৬

সঁগ জখন

মৈয়াক আশীর্বাদ

তঁ ডৰ কিএ

৬

গোৰ নগৈ ছী

দ্বনূ কঽন জোড়ৈ ছী

হে জগদংৰা

৭

জাএত কোনা

মাঁ অহাঁকেঁ ছোৰি ক

অহাঁক রেঁষ্টা

৮

কনৈএ রেঁষ্টা

মৈয়া কোনা স্বততী

জাগৃ হে অম্বে

৯

ভক্তী নৈ জানী

নৈ জানী পূজা ৱিধি

তোৰা জানী মাঁ

১০

কোনা সহৰেঁ

মৈযা এতেক দ্বখ

দূৰ কৰু নে

১১

হে মাঁ ভৱানী

কিএক ৱিঁসৰলোঁ

জগ কন্যাণী

১২

এতেক দিঅ

জে হम ৰাঁচি সকী

অহাঁক কৃপা

১৩

ননকা ফূল

তোড়ি অনলোঁ মৈযা

করু স্বীকাৰ

১৪

ভেলৈ সিংগাৰ

মৈযাক অদভুত

অৰ্চনসঁ

১৬

কপটে মোনে

নহি মৈয়া ভেটতী

বৃঁঝন কৰু

১৬

হমৰ সাঁস

তোহৰ দেন মৈয়া

বিঁসৰন ঠী

১৭

হে ভোনে বাঁৰাঁ

সুধি হমৰো নিখ

ওধৰ দানী

১৮

কমৰথুত্থা

সজন নিহান ঠৈ

রাঁরাঁ নগৰী

১৯

জগদীশ্বৰ

হে প্রভু কৃপা কৰু

শৰণ নিঅ

২০

ভোগ নগারূঁ

গৰীরঁক নরেঁদ

হে ভগরান

২১

কষ্ট হৰু হে

পিতা পৰমেশ্বৰ

ঋাশ ঋহীঁক

২২

ৰাম নামসঁ

সভ কিছু হোএত

ভৰোসা কৰু

২৩

সগৰো হল্লো

পাথৰ জীৰিঁ গেনৈ

ৰামক স্পর্শে

২৪

ৰাধা ৰমণ

জগত কেৰ স্বামী

কতয খুহাँ

২৯

কৃষ্ণ হমৰ

কিএ বিঁসৰলে ছী

সুনূ প্ৰকাৰ

২৩

খবিঁ ক প্ৰভু

ভক্তক খুষ্টিযামে

দৰ্শন দিযৌ

২৭

যশোদা মৈযা

তোহৰ ৰঁলকৰাঁ

তংগ কৰৈএ

২৮

ৱাঁন গোপাল

মোনক মঁদিৰমে

অাৱিঁ ৱিঁৰাজু

২৯

নন্দু গোপাল

নন্দু নেনে হাথমে

মন মোহনা

৩০

হৰে গোবিঁদ

কতয গেলোঁ কৃষ্ণ

দৰ্শন দিঅ

- জগদানন্দ ঝা 'মন্' , মোবাঁগল নংবঁৰ ৯২১২৪৩১০০৩

অপন মংতব্য editorial.staff.videha@gmail.com **পৰ পঠাউ।**

